2 राजा

1 आहाब राजा की मौत के बाद मोआब
इस्राएल के खिलाफ़ हो गया 2 शोमरोन
में अटारी में एक झिलमिलीदार खिड़की में
से एक दिन अहज्याह गिर पड़ा और बीमार
हो गया। इसलिए उसने अपने लोगों को
एक्रोन के बालज़बूब नामक देवता के पास
यह पूछने के लिए भेजा कि उसकी बीमारी
ठीक होगी या नहीं। 3 तभी प्रभु के दूत ने
तिशबी एलिय्याह को शोमरोन के राजा से
जाकर मिलने के लिए कहा। उसे यह पूछने
के लिए भेजा गया कि वह बताए कि एक्रोन
के बालज़बूब से पूछने की ज़रूरत क्या है,
जब कि इस्राएल के परमेश्वर जीवित हैं
4 एलिय्याह बोला, "परमेश्वर का कहना यह
है कि जिस चारपाई पर तुम लेटे हुए हो,
उस पर से कभी भी नहीं उठ पाओगे, लेकिन
मर ही जाओगे" 5,6 उधर अहिज्याह के भेजे
हुए लोगों ने आकर से बताया, "हमें एक
व्यक्ति मिला, जिस ने कहा कि अपने भेजने
वाले से कहो, कि प्रभु का सवाल यह है कि
इस्राएल के प्रभु कहाँ गए कि तुम्हें एक्रोन के
बालज़बूब देवता से पूछने की आवश्यकता
पड़ गयी? इसलिए तुम कभी भी ठीक न हो
पाओगे और पड़े-पड़े मर जाओगे। 7 उसने
उस से पूछा, "वह व्यक्ति जिस ने ये सब
बातें तुम से कही, कैसा दिखता था?" 8 वे
बोले, "उसकी देह पर बड़े-बड़े बाल थे और
उसकी कमर में चमड़े की पेटी थी 9 यह जान
कर कि वह तिशबी एलिय्याह रहा होगा,
उसने पचास सिपाहियों के एक प्रधान के
साथ पचास सिपाहियों को भेजा। इस समय
एलिय्याह पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ था।
प्रधान ने एलिय्याह से कहा, "हे प्रभु के जन,
राजा कह रहा कि तुम नीचे उतर आओ।"
10 एलिय्याह बोला, "यदि मैं प्रभु का जन
हूँ, तो आकाश से आग उतरे और तुम सभी
को बर्बाद कर दे।" तभी ऐसा हुआ और वे
सभी जल कर भस्म हो गए। 11 दूसरी बार
राजा ने फिर एक दल भेजा और प्रधान ने
एलिय्याह को फिर से नीचे आने के लिए
कहा। 12 एलिय्याह जैसे पहली बार कहा
था, वैसे ही फिर कहा और वे सभी जल
मरे। 13 तीसरी बार भी एलिय्याह ने न सुनी
हालांकि प्रधान बहुत गिड़गिड़ाता रहा 14 वह
बोला, "इसके पहले दो बार लोग जान गँवा
बैठे, लेकिन अब ऐसा न होने पाए।" 15 तब
प्रभु का दूत एलिय्याह से कहने लगा कि वह
डरे नहीं और नीचे जाए। वह उतरा और राजा
से मिला भी। 16 एलिय्याह ने फटकार लगाते
हुए कहा, "एक्रोन के बालज़बूब के पास जाने
की क्या आवश्यकता पड़ गयी क्या इस्राएल
के प्रभु से नहीं पूछा जा सकता था, इसलिए
कि तुमने सच्चे प्रभु को छोड़कर पराए देवता
पर भरोसा रखा, इसलिए तुम कभी भी ठीक
नहीं होगे और मर जाओगे?" 17 प्रभु के इन
शब्दों के अनुसार हुआ भी और राजा का
देहान्त हो गया। उसकी गद्दी पर यहोराम
बैठ गया। उसी समय यहूदा में यहोशापात के
बेटे का दूसरे साल का शासन चल रहा था
18 अहज्याह के दूसरे कामों का लेखा-जोखा
इतिहास की किताबों में है।

2 एक दिन प्रभु एलिय्याह को एक
बवण्डर के साथ ऊपर उठाने वाले थे,
उसी दिन एलिय्याह और एलीशा, गिलगाल
से निकले थे 2 एलिय्याह ने एलीशा से कहा,

“मुझे प्रभु बेतेल जाने के लिए कह रहे हैं। तुम यहीं ठहरो। एलीशा बोला, “मैं किसी हालत में आप को नहीं छोड़ूँगा। इसलिए वे दोनों बेतेल चल पड़े। 3 बेतेल में रहने वाले भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे, “क्या तुम्हें यह जानकारी है कि आज तुम्हारे एलिय्याह को प्रभु ऊपर उठाने जा रहे हैं?” एलीशा बोल उठा, “खामोश रहो, मुझे सब मालूम है।” 4 एलिय्याह एलीशा से बोला, “हे एलीशा प्रभु यरीहो जाने के लिए मुझ से कह रहे हैं। तुम यहीं ठहरो। यह हो ही नहीं सकता, कि मैं आपको छोड़ दूँ। इसलिए वे दोनों साथ में यरीहो भी आ गए। 5 यरीहो में रहने वाले भविष्यद्वक्ताओं के चेलों ने आकर एलीशा से कहा, “क्या तुम जानते हो कि आज एलिय्याह को ऊपर उठाया जाएगा?” उसने हाँ में जवाब दिया। 6 फिर एलिय्याह ने एलीशा से कहा कि प्रभु उसे यरदन जाने के लिए कह रहे हैं और तुम्हें चाहिए कि तुम यही ठहर जाओ। एलीशा के शब्द वही थे कि वह एलिय्याह को किसी हालत में नहीं छोड़ेगा। इसलिए वे दोनों साथ ही रहे। 7 भविष्यद्वक्ताओं के शिष्यों में से पचास जन वहीं उनके सामने दूर खड़े रहे और ये दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए 8 तब एलिय्याह ने अपनी चादर पकड़ कर ऐंठी और पानी पर मारा। उसी समय पानी दो हिस्सों में बँट गया। वे दोनों सूखी ज़मीन पर चलते-चलते उस पार उतर गए 9 पार कर लेने के बाद एलिय्याह ने एलीशा से कहा, “इसके पहले कि मैं ऊपर उठा लिया जाऊँ, तुम्हें जो कुछ चाहिए, माँग लो।” एलीशा ने एलिय्याह से उसी आत्मा की माँग की जो उसमें थी 10 एलिय्याह बोला कि उसने एक मुश्किल माँग पेश की है। लेकिन फिर भी यदि वह उसके उठाए जाने के बाद देख सकेगा तो उसकी इच्छा पूरी हो सकेगी, नहीं तो मुमकिन नहीं है। 11 जब उनकी यह बातचीत चल ही रही थी, आग के एक रथ और आग के घोड़ों ने उनको अलग कर दिया और एलिय्याह बवण्डर में होकर ऊपर उठा लिया गया। 12 एलीशा यह सब देखता और चिल्लाता रहा, “हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो। जब वे सभी उसकी आँखों से ओझल हो गए, तब उसने अपने कपड़े फाड़ कर उनके दो टुकड़े कर डाले। 13 फिर एलीशा ने एलिय्याह की उस चादर को उठाया, जो ऊपर से गिर गयी थी। उसे लेकर वह वापस यरदन नदी के तट पर जा खड़ा हुआ। 14 उसने उस चादर को यरदन नदी पर मार कर कहा, “एलिय्याह के प्रभु कहाँ हैं? नदी का पानी दो हिस्सों में बँट गया और एलीशा ने नदी पार कर ली। 15 यह सब देख कर भविष्यद्वक्ताओं के चेलों ने कहा, “एलिय्याह की आत्मा एलीशा पर आ ठहरी है।” इसलिए वे उस से मिले और दण्डवत् किया 16 तब वे बोले, “तुम्हारे दासों के पास पचास ताकतवर आदमी हैं। वे जाकर एलिय्याह को ढूँढ सकते हैं। हो सकता है कि प्रभु के आत्मा ने उसे उठा कर किसी पहाड़ या घाटी पर डाल दिया हो।” एलीशा बोला, “नहीं कोई ज़रूरत नहीं है” 17 वे लोग एलीशा पर इस बात के लिए ज़ोर-ज़बरदस्ती करने लगे। आखिर में तंग आकर उसने कह डाला, “भेज दो” इसलिए उन्होंने पचास आदमी भेज दिए। वे लोग तीस दिन तक एलिय्याह को ढूँढते रहे, लेकिन पा न सके। 18 उस समय तक एलीशा यरीहो ही में ठहरा रहा। जब वे वापस लौटे, तब एलीशा बोला कि उसने मना किया था न? 19 उस इलाके के लोगों ने एलीशा को बताया कि उनका नगर तो खूबसूरत जगह पर बसा

है लेकिन वहाँ का पानी कठोर है। यह भी
कि ज़मीन गर्भ गिराने वाली है। 20 एलीशा
ने कहा, “एक नए प्याले में नमक लेकर मेरे
पास आओ।” 21 उसे लेकर वह पानी के सोते
के पास गया। उसी में नमक डाल कर वह
बोला, “प्रभु का कहना यह है, कि वह इस
पानी को ठीक कर रहे हैं। 22 एलीशा की
कही बात की वजह से तब से वहाँ का पानी
मीठा ही रहा है 23 वहाँ से बेतेल जाते समय
रास्ता चढ़ावदार था। वहाँ के छोटे लड़के
उसे चाटी-चाटी कह कर परेशान करने लगे।
24 एलीशा पीछे मुड़ा और प्रभु के नाम से उन
लड़कों को सज़ा का आदेश दे दिया। तभी
जंगल में सेमादा भालू निकल कर आ गए
और उन्होंने बयालीस लड़कों को जान से
मार डाला 25 उसके बाद वह कर्मेल से होता
हुआ शोमरोन पहुँच गया।

3 यहूदा के राजा यहोशापात के अट्ठारहवें
साल में आहाब का बेटा यहोराम
शोमरोन में शासन करने लगा था। उस का
शासनकाल बारह साल का था 2 जो कुछ प्रभु
को पसन्द नहीं था, उसने वही किया। लेकिन
उसकी बुराई उसके माता-पिता से तो कम
ही थीं। उसने अपने पिता की बनवायी हुयी
बाआल की लाट को हटवा दिया 3 इसके
बावजूद नबात के बेटे यारोबाम जैसी की
गयी बुराईयों से किनारा न किया 4 मोआब
के राजा मेशा के पास ढेर सारी भेड़-बकरियाँ
थीं। वह इस्राएल के राजा को एक लाख
बच्चे और एक लाख मेंढ़ों का ऊन टॅक्स के
रूप में दिया करता था 5 आहाब की मौत
के बाद मोआब के राजा ने उसके खिलाफ़
बलवा कर डाला 6 तभी राजा यहोराम ने
सारे इस्राएल को इकट्ठा किया। 7 और यहूदा
के राजा यहोशापात को समाचार भेजा कि
मोआब के राजा ने उसके विरोध में बलवा
किया है इसलिए लड़ाई में क्या वह उस का
साथ देगा? यहूदा का राजा इस बात पर
राजी हो गया। 8 फिर उस का सवाल था कि
कौन से रास्ते का इस्तेमाल करेंगे? उसने
कहा कि एदोम के जंगल से। 9 इस्राएल,
यहूदा और एदोम के राजा चल पड़े। सात
दिन तक घूमने के बाद फ़ौज तथा साथ
के जानवरों के लिए पानी नहीं मिल पाया।
10 इस्राएल का राजा बोल उठा हाय! प्रभु
का मकसद इन तीन राजाओं को मोआब
के हवाले करने का है 11 यहोशापात ने पूछा
कि वहाँ प्रभु का कोई नबी है या नहीं,
जिस से पूछा जा सके। इस्राएल के राजा के
एक कर्मचारी ने एलीशा के बारे में बताया
12 तब यहोशापात ने बतलाया कि एलीशा
प्रभु से संदेश हासिल करता है। इसलिए
इस्राएल, यहूदा और एदोम के राजा उसके
पास पहुँचे। 13 इस्राएल के राजा से एलीशा
ने उसके आने का कारण पूछा। उसने उसे
उसके माता-पिता के नबियों के पास जाने
के लिए कहा। इस्राएल का राजा बोल उठा,
“ऐसा न कहो, क्योंकि हम तीनों राजाओं को
प्रभु मोआब के सुपुर्द कर डालेंगे। 14 एलीशा
ने कहा, “यदि मैं यहोशापात की इज़्ज़त न
करता होता तो तुम्हारी तरफ़ देखता तक नहीं
15 उसने एक बजाने वाले को बुलवाने की
बिनती की और जब वह बजाने लगा, प्रभु की
शक्ति उस पर आयी 16 वह बोला, “तुम लोग
इस नाले की ऐसी खुदाई करो, कि तमाम
गड्ढे हो जाएँ। प्रभु का कहना यह है कि न
हवा बहेगी न ही बरसात होगी, फिर भी यह
नाला पानी से भर जाएगा। तुम और तुम्हारे
जानवरों के लिए भरपूर पानी होगा। 17,18 तुम
लोगों की समस्या तो हल्की फुल्की है और
मोआब पर तुम लोग जीत हासिल कर लोगे।

19 उस समय तुम सभी मज़बूत और बढ़िया
नगरों को बर्बाद कर डालना। अच्छे पेड़ों
को तुम काट डालना। खेतों में पत्थर डाल
कर उन्हें खराब कर डालनाऔर पानी के
स्त्रोतों को बन्द कर देना।” 20 सुबह-सुबह
अन्नबलि चढ़ाने के वक्त एदोम की दिशा से
पानी बहने लगा और सारा देश पानी से भर
गया 21 यह खबर मिलते ही कि राजा हम
से युद्ध करेंगे, जितने मोआबी नवजवान युद्ध
में जाने लायक थे, वे सभी इकट्ठे हो गए।
22 प्रातःकाल सूरज की किरणें पानी पर इस
तरह पड़ रही थी, कि मोआबियों की ओर
से वह खून की तरह लाल दिखायी दिया।
23 वे सोचने लगे कि राजा आपस में लड़ मरे
होंगे और यह उनका खून है, इसलिए लोगों ने
मोआबियों को लूट लेने के लिए उकसाया।
24 वे लोग जैसे ही इस्राएलियों की छावनी
के पास आए ही थे, कि इसत्राएलियों ने उन्हें
मारना चालू कर दिया और वे मोआब तक
उन्हें मारते गए। 25 इस तरह उन्होंने नगरों को
बर्बाद कर डाला। खेतों में पत्थर डाल कर
खेत को नुकसान पहुँचाया। उन्होंने पेड़ों को
काट डाला और जल के स्त्रोतों को बन्द कर
दिया।केवल कीहेरेशेत के पत्थर रह गए थे,
लेकिन उसको भी चारों ओर गोफ़न चलाने
वालों ने जाकर मारा। 26 यह देख कर कि
युद्ध में हार पक्की है मोआब के राजा ने सात
सौ तलवार रखने वाले आदमी साथ लिए
और एदोम के राजा तक पहुँचने की कोशिश
की। लेकिन वह नाकामयाब हो गया। 27 तब
उसने बड़े बेटे को जो उसके बाद शासन
करने वाला था को पकड़ा और होमबलि
चढ़ा दिया। इसलिए इस्राएल पर बड़ा गुस्सा
हुआ और वे उसे छोड़कर अपने देश लौट
गए।

4 नबियों के शिष्यों की पत्नियों में से
एक महिला ने गिड़गिड़ाकर एलीशा से
बिनती की। वह बोली, “उस का पति जो
प्रभु से डर कर जीता था, मर चुका है। मेरे
पति ने जिस से कर्ज़ लिया था, वह आदमी
कर्ज़ चुकता किए जाने की जगह मेरे दोनों
बेटों को बन्धक बनाना चाहता है। 2 एलीशा
का सवाल था कि वह ऐसी स्थिति में किस
तरह मददगार बन सकता है। उसने महिला
से कहा कि वह बताए कि उसके घर में क्या
क्या है। वह बोली, “एक हँडी और तेल के
अलावा कुछ भी नहीं है। 3 एलीशा ने कहा,
“जाओ और आस पास से ढेर से खाली बर्तन
माँग लो। 4 इसके बाद अपने बेटों के साथ घर
में दरवाज़ा बन्द करने के बाद उन सब बर्तनों
में तेल उण्डेलती जाओ। जो मर जाए उसे
अलग रखना। 5 उस महिला ने बिल्कुल वैसा
ही किया। 6 बरतन भर जाने पर अपने बेटे से
और लाने के लिए कहा, लेकिन और बरतन
नहीं थे। उसी समय तेल की धार थम गयी।
7 यह सब कुछ उस महिला ने जाकर एलीशा
को बतला दिया। एलीशा ने सलाह दी कि वह
तेल बेच कर कर्ज़ चुका दे। बची हुयी राशि
को वह अपने परिवार में लगा ले 8 एक दिन
एलीशा शूनेम गया, जहाँ एक अमीर[a] महिला
रहा करती थी। उस महिला ने एलीशा पर
ज़ोर डाला कि वह उसके घर खाना खाए।
बाद में भी जब-जब एलीशा उस रास्ते से
होकर जाता था, वह उसी के घर पर खाना
खाया करता था। 9 एक दिन उसने अपने पति
से कहा,“यह व्यक्ति जो हमारे यहाँ ठहरा
करता है, मुझे एक प्रभु का जन लगता है।
10 क्यों न हम छत पर एक छोटा-सा कमरा
बनाएँ? हम लोग उसमें एक चारपाई, मेंज़,
कुर्सी और एक दीपक रख देंगे। आने वाले

[a] **4.8** सम्पन्न

दिनों में हम उन्हें वही ठहराएँगे” 11 एक दिन
जब वह आया, तो जाकर ऊपर लेट गया।
उसने अपने सेवक गेहज़ी से कहा कि वह
महिला को बुला लाए। 12,13 महिला के वहाँ
आने पर एलीशा बोला, “तुमने हमारी बहुत
देख-रेख की है। तुम्हारे लिए क्या किया
जा सकता है? क्या तुम्हारे बारे में राजा,
ऑफ़िसर और मुख्य सेनापति को बताया
जाए? महिला बोली, “मैं तो अपने लोगों में
रह रही हूँ।” 14 एलीशा ने फिर सवाल किया,
इसके लिए हम क्या कर सकते है? गेहज़ी
ने जवाब दिया,“इसका पति बूढ़ा है और
इसके पास कोई सन्तान नहीं है।” 15 एलीशा
ने कहा, “उसे बुलाओ।” 16 उसके बुलाने पर
एलीशा ने कहा, “बसन्त के मौसम में दिन पूरे
होने पर तुम्हारे को एक बेटा होगा।” महिला
बोल उठी, “मेरे मालिक! हे प्रभु के भक्त,
ऐसा न कहिए।” 17 इसके बाद वह महिला
गर्भवती हो गयी। वसन्त का मौसम आया
और तभी उसके दिन पूरे होने पर उसके एक
बेटा पैदा हुआ। 18 काफी समय गुज़र जाने के
बाद जब यह लड़का बड़ा हो चुका था, खेत
में अपने पिता के पास कटाई करने वालों
तक पहुँच गया। 19 अचानक उसके सिर में
दर्द होने पर वह चिल्लाया, “आह, मेरा सिर,
मेरा सिर।” पिता ने सेवक को कहा कि वह
उसे उसकी माता के पास ले जाए। 20 उसने
ऐसा ही किया। दोपहर तक वह अपनी माँ
के घुटनों पर पड़ा रहा और फिर मर गया
21 तब उसकी माँ उसे एलीशा के कमरे में ले
गयी और उसके बिस्तर पर लिटा दिया और
दरवाजा बन्द करके नीचे चली आई 22 उसने
अपने पति को समाचार भेजा कि एक सेवक
और एक गदही को भेज दे ताकि प्रभु के भक्त
के पास जा सकूँ। 23 उसने अपनी पत्नी से
वहाँ जाने का कारण पूछा क्योंकि वह तो न
ही नए चाँद का दिन था और न ही विश्राम
दिन। उसने पत्नी के काम में सफ़लता की
कामना की। 24 तब उस महिला ने गदही पर
काठी बान्ध कर सेवक से बिना रूके हाँकते
जाने को कहा। 25 जब वह कर्मेल पहाड़ पर
एलीशा के घर के पास पहुँची, एलीशा ने
अपने सेवक गेहज़ी से कहा, “देखो, वह तो
शूनेमिन ही लग रही है।” 26 दौड़कर जाओ
और पता लगाओ कि सब कुछ ठीक है या
नहीं और उस का पति और बेटा स्वस्थ हैं?
27 शूनेमिन पहाड़ पर एलीशा के पास पहुँच
कर उसके पैरों पर गिर पड़ी। गेहज़ी ने पास
जाकर उसे हटाना चाहा। एलीशा बोल उठा,
“वह परेशान है, उसे छोड़ दो। प्रभु ने मुझे
बताया भी नहीं कि उसकी परेशानी क्या
है।” 28 शूनेमिन बोली, “क्या मैंने आप से
कुछ माँग की थी? क्या मैंने नहीं कहा था
कि मुझे धोखा न दीजिए?” 29 तब एलीशा
गेहज़ी से बोला, “तुरन्त मेरी छड़ी ले जाओ
और इसे उस लड़के के मुँह पर रख देना,
हाँ रास्ते में किसी से कुछ बातें न करना।”
30 तब लड़के की माँ बोल उठी, “मैं तुम्हें
नहीं छोड़ूँगी, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए।”
यह सुन कर वह उठा और उसके पीछे चल
पड़ा 31 इसके पहले कि कोई पहुँचता, गेहज़ी
पहुँच गया और उसने लड़के के मुँह पर छड़ी
रख दी, लेकिन कोई आवाज़ नहीं सुनायी दी
और न ही कोई हलचल हुयी। इसके बाद
वह एलीशा से मिलने लौट गया और बताया
कि लड़का ज़िन्दा नहीं हुआ। 32 एलीशा के
घर पर आते ही उसने लड़के को मरा हुआ
चारपाई पर पड़े देखा। 33 तब वह अकेला
अन्दर गया, दरवाज़े बन्द किए और प्रार्थना
करने लगा 34 तब वह लड़के पर चढ़ कर
लेट गया जिस से कि दोनों के मुँह, आँखें और
हाथ मिल गए। इस तरह पसरे रहने से लड़के

की देह गरम होने लगी। 35 कुछ देर बाद वह
कमरे ही में टहलने लगा और फिर आकर
पसर गया। इसके बाद ही लड़के ने सात बार
छींका और आँखें खोल दी। 36 तब एलीशा
ने गेहज़ी से कहा कि वह शूनेमिन को बुला
ले। उसके आते ही शूनेमिन को उस का बेटा
सौंप दिया। 37 आकर शूनेमिन ने एलीशा को
शुक्रगुज़ारी दी और अपने लड़के को लेकर
चली गयी 38 तभी एलीशा गिलगाल को
वापस चला गया। उस समय देश में आकाल
पड़ा हुआ था। भविष्यद्वक्ताओं के चेले वहीं
सामने बैठे। उसने सेवक से खाना बनाने
को कहा। 39 तभी एक जन जंगली लता से
अपने हाथों में कड़ुवा जंगली कद्दू तोड़ कर
लाया। उसने उसे फाँक-फाँक करके बर्तन में
डाल दिया। 40 तब खाना परोसा गया। खाना
खाते समय वे सभी चिल्ला उठे, “खाने में ज़हर
है।” इस कारण वे खाना न खा सके। 41 तब
एलीशा ने कुछ मैदा मँगवा कर उस बर्तन
में डाल दिया और खाना फिर से परोसा। तब
किसी ने कोई शिकायत नहीं की 42 तभी कोई
जन वहाँ पर बालशालीशा से पहले उपजे हुए
जौ की बीस रोटियाँ और हरी बालें एलीशा
के लिए लाया था। एलीशा ने उन्हें भी सब
के बीच बाँट देने के लिए कहा। 43 उस का
सेवक बोला, “सौ लोगों के लिए यह काफ़ी
नहीं है।” एलीशा ने कहा, “प्रभु का कहना
यह है कि उनके खा लेने के बाद कुछ बच
भी जाएगा।” 44 और ऐसा हुआ भी। उन लोगों
के खा लेने के बाद कुछ बच भी गया

5 अराम के राजा का नामान नाम का
सेनापति राजा की निगाह में काफी
इज़्ज़त रखता था। उसी की अगुवाई में प्रभु
ने अरामियों को जीत दिलवायी थी। यह
सेनापति को कुष्ट रोग था। 2 अरामी लोग एक
बार इस्राएल देश जाकर एक छोटी लड़की
को गुलाम बना कर लाए थे। उसे नामान
की पत्नी की सेवा का काम दिया गया था।
3 एक दिन उसने अपनी मालकिन से कहा,
“यदि मालिक शोमरोन के भविष्यद्वक्ता के
पास होते तो कितना अच्छा होता। मालिक
की बीमारी को वह ठीक कर सकता था
4 किसी ने जाकर कह दिया कि इस्राएली
लड़की इस तरह कह रही है। 5 अराम का
राजा बोला, “तुम जाओ, नामान, मैं इस्राएल
के राजा के नाम एक चिट्ठी भेज दूँगा। तब
वह दस किक्कार चान्दी, छै हज़ार टुकड़े
सोना और दस जोड़ी कपड़े लेकर चल पड़ा।
6 इस्राएल के राजा को उसने यह चिट्ठी दी
जिस में बिनती की गई थी कि वह नामान
का कोढ़ खत्म कर डाले। 7 चिट्ठी पढ़ने के
बाद इस्राएल के राजा ने गुस्से में कहा,
“क्या मैं मारने जिलाने वाला प्रभु हूँ, कि उस
आदमी ने एक बीमार को भेजा है, कि मैं उस
का कुष्ट रोग दूर करूँ? ऐसा लगता है कि
अराम का राजा मुझ से झगड़े का बहाना
ढूँढ रहा है। 8 एलीशा के कान में यह बात
पहुँची कि इस्राएल का राजा बड़े गुस्से में
है। उसने राजा को खबर भिजवायी, कि उसे
परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। उसे मेरे
पास भेज दिया जाए, तब वह जान लेगा कि
इस्राएल में नबी है। 9 तब नामान घोड़ों और
रथों के साथ एलीशा के दरवाज़े तक पहुँचा।
10 तब एलीशा के दूत ने बाहर आकर उसे
एलीशा का समाचार दिया कि यदि नामान
यर्दन नदी में जाकर सात बार डुबकी मारे, तो
उस का कोढ़ जाता रहेगा 11 नामान नाराज़
होकर यह कहता हुआ चला गया कि मैंने
आशा की थी कि एलीशा बाहर आकर मुझे
छूएगा और प्रार्थना करके मेरा कोढ़ दूर कर
देगा। 12 क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर

नदियाँ इस्राएल की नदियों से बेहतर नहीं हैं? क्या उन में नहा कर ठीक नहीं हो सकूँगा? इसलिए वह बड़े तैश में वापस चला गया
13 तब उसके सेवक उस से कहने लगे, “यदि नबी आपको कोई मुश्किल काम करने के लिए कहता तो क्या आप नहीं करते? फिर जब वह यर्दन में डुबकी लगाने को कह रहा है, तो इस में तकलीफ़ क्या है?” 14 एलीशा ने यह बात मान ली। यर्दन में सात बार डुबकी लगाते ही उस का कोढ़ खत्म हो गया 15 तब वह अपने दल के साथ एलीशा के पास आया और बोल उठा, “अब मैंने जान लिया है कि सारी दुनिया में इस्राएल का प्रभु ही सच्चा है। इसलिए मेरी तरफ़ से कुछ ईनाम स्वीकार कीजिए। 16 एलीशा ने कहा, “मैं जीवित प्रभु को अनुभव से जानता हूँ और किसी भी तरह का ईनाम नहीं लूँगा। वह इस तरह अपनी बात पर अड़ा रहा 17 फिर नामान ने कहा, “ठीक है, मुझे दो खच्चर मिट्टी दें, आज के बाद मैं प्रभु को छोड़कर किसी और प्रभु की पूजा नहीं करूँगा। 18 और जब आप रिम्मोन में पूजा के लिए जाने पर मेरे हाथ की मदद लें और मुझे भी रिम्मोन में सिर झुकाना पड़ जाए, तो प्रभु मेरे इस सिर झुकाने के अपराध को माफ़ करें।” 19 एलीशा बोला, “जाओ खुश रहो।” 20 वह थोड़ी दूर ही गया होगा, नामान का सेवक गेहज़ी सोचने लगा कि मालिक ने तो ईनाम लेने से इन्कार कर दिया है मैं ही उसे हड़प लेता हूँ। 21 नामान ने अपने पीछे उसे आता देख कर रथ रोक दिया और उतर कर पूछा कि समस्या क्या है। 22 गेहज़ी ने जवाब दिया, “सब ठीक-ठाक है। एप्रैम के पहाड़ी इलाके से भविष्यद्वक्ताओं के शिष्यों में से दो जन आए हैं। एलीशा ने मुझ से कहा कि उनके लिए मैं एक किक्कार चाँदी और दो जोड़े कपड़े ले आऊँ।” 23 नामान बोला, “दो किक्कार में सन्तुष्ट रहो।” तब उसने काफी गुज़ारिश करके दो किक्कार चान्दी अलग थैलियों में बान्धी और दो जोड़े कपड़े अपने दो नौकरों पर लाद दिए। वे उन्हें उसके आगे-आगे ले चले। 24 टीले के पास पहुँचने पर उसने उन चीजों को घर में रख दिया और उन लोगों को विदा किया 25 वह अन्दर जाकर एलीशा के सामने खड़ा हो गया। एलीशा के पूछने पर कि वह कहाँ गया था उस का उत्तर था, “कहीं नहीं” 26 एलीशा बोला, “जो कुछ हुआ, मुझे अच्छी तरह से मालूम है। क्या यह समय चान्दी, कपड़े, जलपाई, अँगूर के बगीचे, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गुलाम लेने का है? 27 इस वजह से नामान की कुष्ट रोग की समस्या तुम्हारे वंश में लगी रहेगी उस समय गेहज़ी की खाल सफ़ेद हो गयी और वह वहाँ से चला गया।

6 नबियों के शिष्यों ने एलीशा से कहा, “यह जगह जहाँ हम हैं, काफी नहीं है। 2 इसलिए हम यरदन पार जाकर बल्लियाँ लाएँ और यहाँ रहने के लिए कुछ बना लें।” एलीशा ने भी उन्हें इज़्ज़त दे दी। 3 तब किसी ने उसे भी साथ चलने के लिए कहा और वह राजी भी हो गया। 4 यर्दन के किनारे पहुँचकर वे लोग लकड़ी काटने लगे 5 तभी अचानक एक जन की कुल्हाड़ी उसके बेंट से निकल कर पानी में गिर पड़ी। वह चिल्लाकर-चिल्लाकर कहने लगा,“मालिक, वह तो मैं किसी से माँग कर लाया था।” 6 एलीशा ने उस से मालूम किया कि वह किस जगह गिरी थी। जब उसे बतलाया गया, तो उसने एक लकड़ी काट कर वहीं डाल दी। कुछ ही देर में लोहा पानी पर तैरने लगा। 7 और एलीशा के कहने पर उसने उस लोहे को उठा लिया

8 अराम का राजा इस्राएल से लड़ाई में लगा
था और सलाह लेकर उसने एक निश्चित
जगह पर अपनी छावनी डालनी चाही। 9 तब
एलीशा ने इस्राएली राजा को खबर पहुँचायी
कि फलां-फलां जगह में मत जाना, क्योंकि
वहाँ अमालेकी हमला बोलने वाले हैं। 10 इस
तरह की चेतावनी से इस्राएल का राजा
दो बार ही नहीं, बहुत बार नुकसान उठाने
से बच गया। 11 इसलिए अराम परेशान हो
उठा। उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर
उन से पूछा,"हम में से कौन है जो हमारी
जासूसी करके इस्राएल के राजा तक संदेश
पहुँचाता है?" 12 एक कर्मचारी तभी बोल
उठा, "मालिक, मेरे राजा, ऐसा कुछ भी नहीं
हैं। इस्राएल में एलीशा नबी है जो राजा को
वह सब कुछ बतला देता है जो आप अपने
सोने के कमरे में कहते हैं। 13 राजा बोला,
"जाकर देखो कि वह है कहाँ, फिर उसे
पकड़वा लेंगे। सुनने में आया है कि वह अभी
दोतान में है।" 14 तब उसने घोड़ों और रथों
का एक बड़ा दल भेजा, जिन्होंने रात में नगर
को घेर लिया। 15 सुबह एलीशा के सेवक
गेहज़ी ने देखा कि पूरा नगर घिरा हुआ है।
इसलिए वह चिल्ला पड़ा, "हाय, मेरे स्वामी,
हम क्या करें?" 16 वह बोला, "डरो मत,
क्योंकि जो हमारी तरफ़ है वह उन से ज़्यादा
है, जो उनकी तरफ़ है।" 17 तब एलीशा ने
बिनती की, "हे प्रभु, इसकी आँखें खोल दें,
ताकि यह देख पाए। तब प्रभु ने ऐसा ही
किया। उसने देखा कि एलीशा के चारों ओर
का पहाड़ आग के रथों और घोड़ों से भरा
पड़ा है 18 जब अरामी उसके निकट आए,
तब एलीशा ने प्रभु से माँगा कि उन लोगों
की आँखें अन्धी हो जाएँ। देखते-देखते वैसा
ही हो गया। 19 तब एलीशा बोला, "न ही
यह रास्ता है और न ही नगर, तुम लोग मेरे
साथ आओ। मैं उस इन्सान तक तुम्हें पहुँचा
दूँगा, जिस को तुम ढूँढ रहे हो। इस तरह
उन लोगों को उसने शोमरोन पहुँचा दिया।
20 वहाँ एलीशा ने दुआ की, कि उन लोगों
की आँखें खुल जाएँ। आँखें खुलते ही उन्होंने
अपने आपको शोमरोन में पाया 21 उन लोगों
को देखते ही इस्राएल के राजा ने पूछा, "क्या
मैं इन को मार डालूँ? 22 उसने जवाब में कहा,
"नहीं, क्योंकि तुम उनको मार डालते हो,
जिन्हें तलवार और धनुष के बल से गुलाम
बना लेते हो।" तुम उन्हें खाना-पानी दो और
उनके मालिक के पास भेज दो 23 उसने उनके
लिए एक बड़ी दावत की। खाने के बाद वे
अपने स्वामी के पास चले गए। उस दिन के
बाद से अराम का कोई दल इस्राएल देश
नहीं आया 24 इसके बाद ही अराम के राजा
बेन्हदद ने अपनी फ़ौज लेकर शोमरोन पर
हमला कर दिया और उसे घेर लिया 25 तभी
शोमरोन में अकाल पड़ गया। हालत यह हो
गयी कि एक गधे का सिर चान्दी के अस्सी
टुकड़ों में और कबूतर की बीट पाँच चान्दी
के टुकड़ों में बिकी। 26 एक दिन इस्राएल का
राजा शहरपनाह पर टहल रहा था, तभी एक
महिला ने पुकार कर कहा, "हे मालिक, हे
राजा हमें बचाईए।" 27 राजा का उत्तर था
कि यदि प्रभु ही न बचाए तो वह क्या कर
सकता है। खलिहान से या दाखरस के कुण्ड
से?" 28 फिर राजा ने उस से पूछा, "क्या
हुआ तुम्हें? उसने उत्तर दिया, "इस महिला
ने मुझ से कहा था कि आज हम तुम्हारे बेटे
को खाएँगे और कल मेरे बेटे को। 29 मेरे बेटे
को पका कर खा लिया गया अब जब मैं
इसके बेटे को खाने की बात कर रही हूँ तो
इसने उसे छिपा दिया है। 30 ये बातें सुनते
ही राजा ने अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़
लिया। 31 उसने कहा, "यदि मैं शापात के बेटे

एलीशा को मार न डालूँ, तो प्रभु मेरे साथ ऐसा
ही नहीं लेकिन इस से ज़्यादा करे। 32 एलीशा
इस समय अपने घर में बैठा हुआ था और
बुज़ुर्ग लोग भी। इसलिए राजा ने एक व्यक्ति
को भेजा। उसके वहाँ पहुँचने से पहले उन
बुज़ुर्ग लोगों से कहा, "देखो इस ख़ूनी के बेटे
ने किसी को मुझे जान से मारने के लिए भेजा
है। इसलिए इस व्यक्ति के आने पर दरवाज़ा
बन्द रखना" 33 वह उन से बात कर ही रहा
था कि वह व्यक्ति आ गया। राजा कहने लगा
कि यह मुसीबत प्रभु परमेश्वर की ओर से
है इसलिए मैं प्रभु का इन्तज़ार क्यों करता
रहूँ?

7 तब एलीशा बोला, "प्रभु क्या कहते
हैं, सुनो, 'कल इसी समय शोमरोन के
फ़ाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और
दो सआ जौ एक शेकेल में बिकेगा 2 तब
उस ऑफ़िसर ने जिस के हाथ पर राजा
भरोसा रखता था, एलीशा से कहा, 'चाहे
प्रभु आकाश की खिड़कियाँ और दरवाज़े भी
खोल दें, तौभी यह मुश्किल है।" एलीशा ने
जवाब में कहा, "तुम अपनी आँखों से इस
सच्चाई को देखोगे, लेकिन उस अनाज में से
खा नहीं सकोगे।" 3 चार कुष्ट रोगी फ़ाटक
के बाहर थे। वे आपस में कहने लगे, "हम
यही बैठे-बैठे क्यों मर जाएँ?" 4 यदि हम
यह सोचें कि नगर में जाने से हम ज़िन्दा
नहीं रहेंगे, तो हमारे यहीं बैठे रहने से भी
क्या फ़ायदा? 5 शाम के समय वे अराम की
छावनी की दिशा में चल दिए। वहाँ जब
पहुँचे, तो देखा कोढ़ी नहीं है। 6 प्रभु ने अराम
की फ़ौज को घोड़ों-रथों की भारी सेना की
आवाज़ सुनवाई थी। उन लोगों को यह शक
हो गया था कि इस्राएल के राजा ने हित्ती
और मिस्रियों राजाओं को पैसा देकर उन
पर हमला करने को बुलवाया था। 7 इसलिए
शाम के समय वे लोग डर कर ऐसे भागे कि
अपने तम्बू, जानवर और छावनी को वैसा
ही छोड़ दिया 8 जब ये कुष्ट रोगी छावनी की
सरहद को पारकर वहाँ पहुँचे तो एक तम्बू
में भीतर जाकर खाया-पिया। जो चाँदी-सोना
और कपड़े मिले वह सब छिपा दिया। फिर
लौटकर दूसरे तम्बू में गए और उसमें से भी
कुछ ले लिया। 9 फिर उन्होंने कहा, "हम जो
कर रहे हैं, वह अच्छा काम नहीं है। आज
तो ख़ुशी की ख़बर का दिन है, लेकिन हम
दूसरों को बतला नहीं रहे हैं। यदि सुबह
तक हम यदि ठहरे रहे, तो ज़रूर हमें सज़ा
मिलेगी। इसलिए चलो, हम राजा के परिवार
के लोगों को बतला देते हैं। 10 तब जाते हुए
उनकी मुलाकात चौकीदारों से हुयी। उनको
उन्होंने बतलाया, "अराम की छावनी में हम
ने किसी इन्सान को नहीं पाया। वहाँ केवल
घोड़े और गधे हैं। 11 तब चौकीदारों ने यह
समाचार राजभवन तक पहुँचा दिया 12 बीच
रात राजा उठ गया। उसने अपने कर्मचारियों
से कहा, "अरामी जानते हैं कि हम लोग भूखे
हैं, इसलिए वे छावनी में से मैदान में छिप
जाने को कह कर गए हैं, कि जब वे नगर से
बाहर आएँगे, तब हम उन्हें ज़िन्दा ही पकड़
कर नगर में जा पाएँगे।" 13 राजा के एक
कर्मचारी ने कहा, "जो घोड़े नगर में बचे हुए
हैं, उन में से पाँच भेज कर हाल-चाल मालूम
कर लेंगे।[a] 14 इसलिए उन्होंने दो रथ और
घोड़े लिए। राजा ने उन्हें अराम की फ़ौज को
देखने के लिए उनके पीछे भेजा। 15 यर्दन तक
पहुँचते-पहुँचते उन्होंने रास्ते को कपड़ों और
बर्तनों से भरा हुआ देखा। इन कपड़ों और
बर्तनों को अरामियों ने अपनी जान बचा-कर

[a] **7.13** वे इस्राएल की भीड़ की तरह है जो नगर में रह गए हैं

भागते वक्त छोड़ दिया था। लौटकर दूतों ने
यह संदेश राजा को दिया 16 लोगों ने अराम के
तम्बुओं को लूट लिया। जैसा प्रभु ने बताया
था, एक सआ मैदा एक शेकेल में और दो
सआ जौ एक शेकेल में बिका। 17 राजा ने
उस ऑफ़िसर को जिस पर वह बहुत भरोसा
रखता था, फ़ाटक पर नियुक्त किया। लेकिन
वह वहाँ भगदड़ के समय लोगों के पैरों
से कुचल दिया गया। इस तरह से एलीशा
की कही हुयी बात पूरी हो गयी। 18,19 उस
ऑफ़िसर ने एलीशा से कहा था कि चाहे प्रभु
आकाश के खिड़की दरवाज़े भी खोल दें,
तौभी इतना सस्ता सामान नहीं मिल पाएगा।
एलीशा का जवाब था कि वह यह सब
देखेगा, लेकिन उस का फ़ायदा उसको नहीं
मिलेगा। 20 उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ
और वह वहीं फ़ाटक पर कुचल दिया गया।

8 जिस महिला के बेटे को एलीशा ने
जीवन दान दिया था, उसे सलाह दी
थी कि वह उस जगह को छोड़कर किसी
और जगह परिवार सहित चली जाए क्योंकि
वहाँ सात साल तक आकाल पड़ने वाला
था। 2 एलीशा की बात मानकर वह सात
साल तक पलिश्तियों के देश में रही। 3 सात
साल के बाद वह वापस अपने गाँव में लौट
आयी और अपने घर और ज़मीन की माँग
के लिए राजा के पास गई। 4 तभी राजा की
बातचीत एलीशा के सेवक गेहज़ी से हो रही
थी। राजा की दिलचस्पी उनकामों को सुनने
के लिए थी, जो एलीशा ने किए थे। 5 जब
गेहज़ी महिला के मरे बेटे के ज़िन्दा होने
की बात कर ही रहा था, यह महिला वहाँ
पहुँच गयी। तभी गेहज़ी ने बताया कि यही
वह महिला है और यह है उस का बेटा,
जिसे जिलाया गया था। 6 राजा के पूछ-ताछ
करने के बाद उसने गवर्नर को आदेश दिया
कि जो कुछ इसका था और सात साल की
इसके खेत की आमदनी इसे दी जाए। 7 तभी
एलीशा दमिश्क गया। उस समय वहाँ का
राजा बेन्हदद बीमार था। उसे मालूम पड़ा
कि एलीशा वहाँ आया हुआ है। 8 राजा ने
हज़ाएल से कहा, “प्रभु के जन से मुलाकात
कर लो, उसके लिए कुछ ईनाम भी ले जाओ।
उस से मालूम करो मैं बचूँगा या मर जाऊँगा।”
9 एलीशा से मिलने हज़ाएल गया और साथ में
दमिश्क की बढ़िया से बढ़िया चीजें चालीस
ऊँटों पर लदवा कर ले गया। वहाँ पहुँच
कर उसने एलीशा से पूछा, “अराम का राजा
बेन्हदद सख्त बीमार है। वह जानना चाहता
है कि वह ठीक हो जाएगा या यह बीमारी
उसकी जान ले लेगी। 10 एलीशा बोला, “नहीं
बचेगा।” 11 वह उसकी ओर देखता ही रह
गया और शर्मिन्दा भी हुआ। और एलीशा के
आँसू गिरने लगे। 12 तब हज़ाएल पूछ बैठा,
“आप क्यों रो रहे हैं? उस का जवाब था,
इसलिए कि मैं जानता हूँ कि तुम इस्राएलियों
पर क्या-क्या ज़ुल्म ढाओगे। उनके मज़बूत
नगरों को तुम भस्म कर डालोगे। तलवार
से उनके जवानों को मार डालोगे, बच्चों को
पटक डालोगे और गर्भवती महिलाओं को
फाड़ डालोगे। 13 हज़ाएल बोला, “मैं तो कुत्ते
की तरह हूँ। मेरी हिम्मत ही क्या, कि ऐसा
करूँ? 14 एलीशा बोला, “प्रभु ने मुझे यह
बता दिया है कि तुम अराम के राजा बन
जाओगे।” तब वहाँ से अपने देश लौट गया।
जाते ही बेन्हदद ने सब कुछ पूछा तो उसने
बता दिया कि राजा बचेगा नहीं। 15 दूसरे दिन
उसने रज़ाई को पानी से भिगो दिया और
उसके मुँह को ऐसा ढाँक दिया, कि वह चल
बसा। इसके बाद से हज़ाएल राज्य करने
लगा। 16 इस्राएल के राजा आहाब के बेटे

योराम के पाँचवे साल में, जब यहूदा का
राजा यहोशापात ज़िन्दा था, तभी यहोशापात
का बेटा यहोराम यहूदा पर शासन करने लगा
17,18 उस का जीवन भी वैसा था जैसा दूसरे
इस्राएल के राजा, आहाब आदि का था।
उसकी पत्नी आहाब की बेटी थी। वह उन्हीं
कामों को करता था, जिन्हें प्रभु ने मना किया
था। 19 फिर भी प्रभु ने यहूदा को बर्बाद नहीं
करना चाहा। ऐसा दाऊद के कारण था। प्रभु
ने उस से वायदा किया था कि उसके वंश को
एक दिये की तरह रोशनी देता हुआ रखेंगे।
20 उसके समय में एदोम ने यहूदा के शासन
से अपने आपको अलग करके खुद का एक
राजा बना लिया 21 तभी योराम अपने सभी
रथों को लेकर साईर गया। वह रात को
उठा और उन एदोमियों को जो उसे घेरे हुए
और रथों के प्रधानों को भी मारा। फिर लोग
अपने-अपने डेरों की ओर भाग गए। 22 इस
तरह से एदोम यहूदा के वश में न रहा। उस
समय लिब्ना ने भी यहूदा की अधीनता छोड़
दी थी। 23 योराम के बारे में पूरा ब्यौरा हमें
यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में
मिलता है। 24 योराम की मौत के बाद उसे
दाऊदपुर में दफ़ना दिया गया और उसकी
जगह उस का बेटा अहज्याह उसकी गद्दी
पर बैठ गया 25 आहाब के बेटे इस्राएल के
राजा योराम के बारहवें साल में यहूदा के
राजा यहोराम का बेटा अहज्याह राज्य करने
लगा। 26 उसकी उम्र उस समय बाईस साल
थी। वह एक ही साल राज्य कर सका।
अतल्याह उसकी माता थी, जो इस्राएल के
राजा ओम्री की पोती थी। 27 वह भी आहाब
के परिवार का सा जीवन जीता था, जो प्रभु
को पसन्द नहीं था। 28 वह आहाब के बेटे
योराम के साथ गिलाद के रामोत में अराम
के राजा हज़ाएल से युद्ध करने गया और
अरामियों ने योराम को ज़ख्मी कर डाला।
29 राजा योराम को लौटना पड़ा ताकि यिज़्रेल
में अपना इलाज करवाए ।उसे देखने यहूदा
के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह गया।

9 एलीशा नबी ने एक दिन नबियों के
शिष्यों में से एक को बुलाकर तैयार
होकर तेल की एक बोतल गिलाद के
रामोत ले जाने के लिए कहा 2 उसने कहा,
“यहोशापात के बेटे और निमशी के पोते येहू
को ढूँढ लेना। उसे अन्दर के कमरे में अलग
ले जाना। 3 तेल की बोतल को उसके ऊपर
उण्डेलते हुए कहना कि प्रभु का कहना यह है
कि वह इस्राएल का राजा बनने के लिए उसे
अलग[a] कर रहे हैं। ऐसा करने के एकदम बाद
वहाँ से भाग लेना 4 तब उस व्यक्ति ने ऐसा
ही किया 5 वहाँ पहुँचते ही उसने सेनापतियों
को बैठा हुआ देखा। उसने सेनापति से कहा,
“मुझे कुछ कहना है।” येहू पूछ बैठा, “हम
में से किस से?” उसने कहा, “सेनापति, तुम
ही से”। 6 इसके बाद वह उठा और यह
कहते हुए तेल उण्डेला, “इस्राएल के प्रभु
का कहना है कि मैं अपने लोगों के ऊपर
राजा होने के लिए तुम्हारा अभिषेक कर रहा
हूँ। तुम अपने मालिक आहाब के परिवार
को खत्म कर डालना। इस तरह से इज़ेबेल
द्वारा नबियों और प्रभु के सेवकों के खून का
बदला लिया जाएगा। 7,8 तब आहाब के वंश
का हर एक जन बर्बाद हो जाएगा। यहाँ तक
कि गुलाम और आज़ाद सभी मारे जाएँगे 9 मैं
आहाब के घराने को नबात के बेटे यारोबाम
सा और अहिय्याह के बेटे बाशा की तरह
कर डालूँगा 10 इज़ेबेल को यिज़्रेल में कुत्ते
खा जाएँगे और उन्हें दफ़नाने वाला कोई न

[a] **9.3** अभिषेक

मिलेगा।" यह कह कर उसने दरवाज़ा खोला
और भागा। 11 तब येहू अपने मालिक के
कर्मचारियों के पास आ पहुँचा, जहाँ एक ने
पूछा कि सब कुछ ठीक-ठाक है या नहीं,
उसके वहाँ आने का मकसद भी उसने पूछा
12 उन्होंने कहा, झूठ है, हमें बताओ। उसने
कहा,उसने मुझ से कहा तो बहुत , लेकिन
मतलब यह है कि प्रभु कहते हैं कि इस्राएल
का राजा होने के लिए वह तुम्हारा अभिषेक
कर रहे हैं । 13 उसी समय उन लोगों ने अपने
कपड़े उतारे और उसके नीची सीढ़ी ही पर
बिछाया और नरसिंगे फूँक कर ऐलान किया
कि येहू राजा है। 14 इस तरह निमशी के
पोते और यहोशापात के बेटे येहू ने योराम
से राजद्रोह की योजना बनायी। योराम सब
इस्राएल सहित अराम के राजा हज़ाएल के
कारण गिलाद के रामोत की देख-भाल कर
रहा था। 15 राजा योराम अरामियों से लगे
घावों का इलाज कराने को यिज़्रेल लौट चुका
था, तभी येहू ने कहा, यदि तुम्हारा मन ऐसा
है तो इस नगर में से निकल कर यिज़्रेल में
सुनाने के लिए कोई न जाने पाए। 16 तब येहू
रथ में यिज़्रेल जाने को तैयार हो गया, जहाँ
योराम पड़ा हुआ था। उस समय यहूदा का
राजा अहज्याह योराम को देखने वहाँ आया
हुआ था। 17 येहू के दल को आते हुए यिज़्रेल
के गुम्मट पर खड़े हुए चौकीदार ने कहा, "मैं
एक दल देख रहा हूँ।" योराम ने कहा, "उन
से मिलने एक सवार को भेजो और हाल-चाल
पूछो।" उसने जाकर पूछा भी. येहू का जवाब
था, "कुशल से तुम्हें क्या लेना-देना। मेरे पीछे
आओ।" तब चौकीदार ने कहा, "वह दूत
उनके पास पहुँचा तो था लेकिन वापस लौट
कर नहीं आया। 18,19 इसी तरह से दूसरे
सवार को भी हाल-चाल पूछने भेजा गया।
दोबारा भी येहू ने वही जवाब दिया। 20 तब
चौकीदार ने कहा, "वह भी उनके पास पहुँचा
तो था, लेकिन वापस लौट कर नहीं आया
उसका हांकना निमशी के पोते की तरह
है; वह बड़ी उग्रता से हांकता है। 21 योराम
बोला, "मेरे रथ को जुतवाओ।" रथ जुतवाने
के बाद, इस्राएल का राजा योराम और यहूदा
का राजा अहज्याह दोनों ही अपने-अपने रथ
पर चढ़कर निकल गए। येहू से मिलने के
लिए बाहर यिज़्रेल नाबोत की ज़मीन में उस
से मुलाकात की। 22 येहू योराम से पूछ बैठा,
"सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है?" येहू
ने कहा, जब तक तुम्हारी माँ छिनालपन[a]
और टोना करती रहेगी, तब तक कोई आशा
नहीं है।" 23 तब योराम हाथ फेर के और
अहज्याह से यह कह कर कि यह धोखा है
बोला, चलो भाग चलें। 24 येहू ने ऐसा निशाना
साधा कि योराम का दिल भिद गया और वह
रथ पर ही गिर पड़ा 25 तब येहू बिदकर नाम
अपने एक ऑफ़िसर से बोला, "उसे उठाओ
और नाबोत की ज़मीन में डाल दो। जब मैं
और तुम एक संग सवार होकर उसके पिता
आहाब का सा जीवन जी रहे थे, 26 तभी प्रभु
ने यह कह दिया था, "नाबोत और उसके
बेटों की हत्या को मैंने देखा है और मैं इन्साफ़
करूँगा। उसी प्रभु के वचन के अनुसार इसे
उठाओ और उसी ज़मीन में पटक दो।" 27 यह
सब देखने के बाद यहूदा का राजा अहज्याह
बगीचे के भवन के रास्ते से होकर भागा। येहू
ने उस का पीछा करते हुए कहा, "उसे रथ
पर ही मारो।" लेकिन वह यिबलाम के पास
गूर की चढ़ाई ही पर मारा गया 28 तब उसके
कर्मचारियों ने उसे रथ पर बिठाया और
यरूशलेम को पहुँचा दिया जहाँ दाऊदपुर में
उसे दफ़ना दिया गया 29 अहज्याह आहाब

[a] **9.22** मूर्तियों के पीछे जाना

के बेटे योराम के ग्यारहवें साल में यहूदा
पर राज्य करने लगा था 30 जब येहू यिज्रेल
आया, तभी यह सुनते ही ईज़ेबेल ने आँखों
में काजल लगा कर, बालों को बना कर,
खिड़की में से झाकने लगी थी। 31 येहू के
फ़ाटक में से आते समय वह बोली, “अपने
मालिक का खून करने वाले जिम्री, क्या सब
ठीक- ठाक है? 32 खिड़की की ओर उसने
तभी देख कर कहा, “मेरी तरफ़ कौन है?
तभी दो तीन खोजों ने उसकी ओर देखा।
33 तब वह बोला, “उसे नीचे फेंक दो। उन्होंने
उसे फेंक भी दिया। उसके खून के छींटे
दीवार पर और कुछ घोड़ों पर गिरे 34 इसके
बाद वह अन्दर गया और खाने पीने लगा
और बोला, “जाओ उस राजा की बेटी को
दफ़ना दो।” 35 जब वे उसे दफ़नाने के लिए
गए, तब उसकी खोपड़ी, पाँव और हथेलियों
को छोड़कर कुछ और न पाया। 36 लौटकर
यह बात उन लोगों ने बता दी। तब उसने
कहा, “यह नबूवत है जो प्रभु ने अपने दास
एलीशा से करवायी थी, वह यह कि इसलिए
उन्होंने लौटकर उससे कह दिया; तब उसने
कहा, यह याहवे की कही बात है, जो उन्होंने
अपने दास तिशबी एलिय्याह से कहलवाई
थी, कि इज़बेल का मांस यिज्रेल की ज़मीन
पर कुत्ते खाएंगे। 37 यह भी कि वह लाश खाद
की तरह पड़ी रहेगी। कोई पहचान न सकेगा
कि यह इज़ेबेल की लाश है।”

10 शोमरोन में आहाब के सत्तर बेटे
और परपोते रहा करते थे। इसलिए
येहू ने शोमरोन में जो बुज़ुर्ग और यिज्रेल के
गवर्नर थे और आहाब के बच्चों की देख-रेख
करते थे, चिट्ठी लिख कर भेजी। 2 लिखा
यह था, “कि तुम्हारे मालिक के बेटे और
पोते तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारे पास घोड़े और
हथियार हैं। तुम्हारे पास एक मज़बूत नगर भी
है। 3 इस खत के मिलते ही अपने मालिक
के बेटों में से जो सब से योग्य हो, उसे
पिता के राजासन पर बैठा दो और युद्ध में
शामिल हो जाओ।” 4 इस सलाह से वे डर
गए और कहने लगे, “उसके सामने दो राजा
तक न ठहर सके तो फिर हम क्या हैं? 5 तब
उन सभी ने मिल कर येहू को यह संदेश
भेजा, “हम आपके दास हैं। आप जो कुछ
कहेंगे, हम करेंगे। हम किसी को राजा नहीं
बनाना चाहेंगे। आपकी मर्जी आप जो कुछ
भी करें।” 6 तब उसने दूसरी चिट्ठी भेज कर
कहा, “यदि तुम मेरे पक्ष में हो, तो जो मैं
कहूँ, वही करो। अपने मालिक के बेटों और
परपोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय
यिज्रेल में हाज़िर होना“यह खत रईसों के हाथ
लगते ही उन्होंने राजबेटों के सिरों को काट
डाला। सिरों को टोकरियों में रख कर यिज्रेल
को भेज दिया। 7,8 एक कर्मचारी ने येहू को
खबर दे दी कि राजबेटों के सिर आ गए है।
येहू ने उन सिरों को सुबह तक फ़ाटक में
दो ढेर करके रखने को कहा। 9 सुबह बाहर
जाकर खड़े-खड़े सभी लोगों से उसने कहा,
“तुम लोगों का कोई अपराध नहीं हैं। मैंने
अपने मालिक से बलवा की योजना बना कर
उस का खून किया था, लेकिन इनकी जान
किस ने ली? 10 तुम्हें यह मालूम होना चाहिए
कि जो बात प्रभु ने अपने दास एलिय्याह
से कहलायी थी, उसे प्रभु ने पूरा कर दिया
है, सभी बातों को भी। 11 तब आहाब के
परिवार के जितने लोग यिज्रेल में रह गए थे,
उन सभी को और जितने ऑफ़िसर, पुरोहित
और दोस्त थे उन्हें भी कत्ल कर दिया।
12,13 वहाँ से वह शोमरोन गया। वह रास्ते
में जहाँ चरवाहे ऊन कतर रहे थे, पहुँचा ही
था कि यहूदा के राजा अहज्याह के भाई

येहू से मिले। पूछने पर उन्होंने बताया कि वे
अहज्याह के भाई हैं। यह भी कि वे राजमाता
और राजबेटों का हाल-चाल लेने जा रहे
हैं। 14 तब वह बोला, “इन्हें ज़िन्दा पकड़
लो।” उन्होंने बयालीस लोगों को पकड़ भी
लिया। उन्हें ऊन कतरने की बावली पर मार
डाला गया 15 उसके वहाँ से चले जाने के
बाद, रेकाब का बेटा यहोनादाब आता हुआ
दिखा। हाल-चाल पूछते हुए उसने कहा, “मेरे
दिल में तुम्हारे लिए कोई खोट नहीं है, क्या
तुम भी साफ़ दिल के हो? यहोनादाब का
उत्तर हाँ में था। फिर उसने कहा, “यदि
यह सच है तो मुझे अपना हाथ दो।” जब
उसने अपना हाथ दिया, तो उसे पकड़े हुए
वह उसे रथ पर चढ़ाने लगा। 16 यह भी
उसने कहा, “मुझे प्रभु के लिए ज़बरदस्त
जलन है।” 17 शोमरोन पहुँचने पर उसने प्रभु
के एलीशा को दिए गए वायदे के अनुसार,
शोमरोन में आहाब के बचे लोगों को येहू
ने खत्म कर डाला। 18 इसके बाद येहू ने
लोगों को इकट्ठा करके कहा, “आहाब ने
जितनी उपासना बाआल की करी थी, उस
से अधिक मैं करूँगा। 19 इसलिए बाआल
के सभी नबियों, पुरोहितों और पूजने वालों
को बुला लाओ। हम एक बड़ा यज्ञ करने
वाले हैं। सभी को उसमें आना है, जो नहीं
आएगा उसे मौत के घाट उतारा जाएगा।”
यह काम येहू ने इसलिए किया ताकि वह
बाआल के सभी पूजा करने वालों को बर्बाद
कर डाले। 20 तब येहू ने बाआल की बड़ी
महासभा का ऐलान किया और लोगों ने भी।
21 पूरे देश में उसने लोगों को भेजा कि लोगों
को बुलाकर लाएँ। सभी लोग आए भी। जगह
लोगों से खचाखच भर गयी। 22 तब उसने
कपड़ों के अधिकारी से कहा, “बाल के सभी
उपासकों के लिए कपड़े लाओ।” उसने ऐसा
तुरन्त किया। 23 इसके बाद येहू रेकाब के
बेटे यहोनादाब को अपने साथ बाआल के
भवन में आया और बाआल के मानने वालों
से पूछा कि यहाँ कोई प्रभु का मानने वाला
तो नहीं है? तब वे मेलबलि और होमबलि
चढ़ाने की तैयारी करने लगे। 24 येहू ने बाहर
अस्सी आदमियों को आदेश दिया था, “यदि
उन लोगों में से जिन्हें मैं तुम्हारे सुपुर्द कर
दूँ, कोई भी बचने पाए, तो उसको भी अपनी
जान गवाँनी पड़ेगी। 25 होमबलि चढ़ाए जाने
के बाद येहू की आज्ञा के अनुसार अन्दर
जाकर उन्हें मारा गया। पहरुए और सरदार
उनको बाहर फेंक कर बाल के भवन के
नगर को गये। 26 उन्होंने बाल के भवन की
लाटों को जला दिया, 27 और इमारत को
पायखाना बना दिया। 28 इस तरह येहू ने
बाआल को इस्राएल से खत्म कर डाला।
29 इसके बावजूद बेतेल और दान में सोने के
बछड़ों की पूजा से येहू दूर न हुआ। 30 प्रभु
ने येहू से कहा,” मेरी निगाह में जो ठीक है
,तुमने किया है ।जैसा मैं चाहता था, वैसा
बर्ताव तुमने आहाब के कुटुम्ब से किया है।
इसलिये तम्हारे परपोते के बेटे तक तुम्हारी
औलाद इस्राएल के राजासन पर बैठेगी।”
31 यह सुनने के बावजूद येहू ने इसे गम्भीरता
से नहीं लिया।वह यारोबाम के गुनाहों में
बना रहा। 32 इन दिनों में प्रभु ने इस्राएलियों
की गिनती कम करने के लिये हज़ाएल
का इस्तेमाल किया। 33 यरदन से पूरब की
तरफ़ गिलाद का पूरा देश,गादी, रूबेनी और
मनश्शेई के देश, गिलाद और बाशान तक
34 येहू के दूसरे काम और बहादुरी के किस्से
राजाओं की किताब में लिखे गये। 35 येहू की
मौत के बाद उसे शोमरोन में दफ़नाया गया।

उसकी जगह उस का बेटा यहोआहाज राजा
बना। 36 येहू ने शोमरोन में रह कर इस्राएल
पर अट्ठाईस सालों तक शासन किया था।

11 यह देख कि मेरा बेटा मर चुका
है, उसकी माँ अतल्याह ने पूरे वंश
को बर्बाद कर दिया 2 यहोशेबा राजा योराम
की बेटी और अहिज्याह की बहन थी।
उसने अहज्याह के बेटे योहाश को मारे जाने
वाले राजकुमारों के बीच में से चुरा कर
दाई सहित बिस्तर रखने के कमरे में छिपा
दिया। इसलिए वह बच गया था। 3 उसके
पास वह प्रभु परमेश्वर के भवन में छैः
साल तक छिपा रहा। इसी दौरान अतल्याह
देश पर शासन करती रही। 4 सातवें साल
में यहोयादा ने जल्लादों और गार्ड लोगों के
शतपतियों को बुलवाया। वह उन्हें प्रभु के
भवन में अपने पास ले आया। उन से वाचा
बाँधने के बाद और कसम खिला कर उन्हें
राजपुत्र को दिखाया। 5 उसने आदेश दिया,
“तुम में से जो लोग विश्राम दिन में आने
वाले हैं, उन में से एक तिहाई राजभवन
की चौकीदारी करें। 6 एक तिहाई लोग शूर
नाम फ़ाटक पर ठहरें। एक तिहाई चौकीदारी
करने वालों के पीछे के फ़ाटक पर रहे।
7 जितने विश्राम दिन को बाहर जाने वाले हों,
वे राजा के आस- पास होकर प्रभु के भवन
की देख-भाल करें। 8 अपने-अपने हथियार
लिए हुए तुम राजा के चारों ओर रहना।
जो बीच में घुसना चाहे, उसे मार डाला
जाए। राजा के आते-जाते समय तुम उसके
साथ रहना 9 शतपतियों ने यहोयादा राजा के
इस आदेश के हिसाब से सब कुछ किया।
वे विश्राम दिन को आने जाने वाले दोनों
दलों के अपने-अपने लोगों को साथ लेकर
यहोयादा याजक के पास गए। 10 तब याजक
ने शतपतियों को दाऊद राजा के बर्छे और
ढालें जो प्रभु के भवन में थी, दीं। 11 इसलिए
वे चौकीदार अपने हाथों में हथियार लिए
हुए भवन के दक्षिणी कोने से लेकर उत्तरी
कोने तक वेदी और भवन के पास राजा
के चारों ओर उसकी आड़ किए हुए खड़े
रहे। 12 तब वह राजकुमार को बाहर लाया
और उसके सिर पर ताज तथा साक्षीपत्र
रख दिया। फिर लोगों ने उस का अभिषेक
करके उसे राजा बनाया। तभी ताली बजाते
हुए लोग बोले, “राजा ज़िन्दा रहे।” 13 जब
अतल्याह को पहरा देने वालों और लोगों की
हलचल सुनायी पड़ी, तब वह उनके पास
प्रभु के भवन में पहुँची। 14 उसने राजा को
खम्भे के पास खड़ा देखा और वहीं प्रधान
तथा तुरही बजाने वाले भी खड़े थे। सभी
लोग खुश हो रहे थे और तुरही बज रही थी।
तभी अपने कपड़े फाड़ते हुए अतल्याह चिल्ला
उठी, “राजद्रोह-राजद्रोह।” 15 तभी यहोयादा
पुरोहित ने दल के अधिकारी शतपतियों को
आदेश दिया, “उसे अपनी पंक्तियों के बीच से
निकाल ले जाओ। जो कोई उसके पीछे जाए
उसे मार भी डालो।” पुरोहित बोला, “प्रभु
के भवन में उसे न मारा जाए।” 16 इसलिए
उन्होंने दोनों ओर से उसको जगह दी और
वह उस रास्ते के बीच होकर चली गयी,
जिस से घोड़े राजभवन में जाया करते थे।
वहीं उसे मार डाला गया। 17 इसके बाद
यहोयादा ने प्रभु के और प्रजा के बीच प्रभु
के लोग होने की वाचा बन्धाई। उसने राजा
और प्रजा के बीच वाचा बन्धाई। 18 तब सभी
लोगों ने पहुँचकर बाआल की इमारत को
गिरा दिया। उसकी मूरतों और वेदियों को
ढा दिया। वहीं बाआल के पुरोहित मतान
को वेदियों के सामने मार डाला 19 तब वह
शतपतियों, जल्लादों और पहरा देने वालों और

सभी लोगों को साथ लेकर राजा को प्रभु
के भवन से नीचे ले गया। वहाँ पहरूओं
के फ़ाटक के रास्ते से राजभवन को पहुँचा
दिया। इस तरह राजा गद्दी पर बैठ गया।
20 सभी लोग खुश होने लगे तथा सब जगह
शान्ति भी हो गयी। 21 जब जोआश राज्य
करने लगा उस समय उसकी उम्र सात साल
की थी।

12 सात साल की उम्र में योआश
राजा बना। उस समय येहू का
सातवाँ साल था। उसने यरूशलेम में चालीस
साल तक शासन किया। उसकी माँ बेर्शेबा
की थी और उस का नाम सिब्या था
2 यहोयादा पुरोहित योआश को सिखाता रहा
था इसलिए जो कुछ प्रभु की निगाह में सही
है, वह करता रहा। 3 इसके बावजूद ऊँची
जगहों पर कुर्बानी चढ़ायी जाती थी और
धूप जलाया जाता था। इन ऊँची जगहों को
ढाया न गया था 4 योआश पुरोहितों से बोला,
“अलग की हुयी चीजों का जितना पैसा प्रभु
के भवन में पहुँचाया जाए, अर्थात् गिने हुए
लोगों का पैसा और जितना पैसा जो भवन में
लाना चाहे, 5 वह सब पुरोहित लोग अपनी
जान पहचान के लोगों से लें। टूट-फूट के
सुधार के लिए उसी पैसे का इस्तेमाल भी
करें। 6 लेकिन पुरोहितों ने योआश राजा के
तेईसवें साल तक दिलचस्पी नहीं दिखायी।
7 इसलिए योआश राजा ने यहोयादा पुरोहित
और दूसरे याजकों को बुलाकर फटकारा,
“यह सब क्या है, क्यों सुधार काम नहीं
किया जाता है?” आज से लोगों से पैसा
मत वसूलना। लेकिन जो कुछ मिले उसे
टूट-फूट सुधार में लगाना 8 तब पुरोहितों ने
यह स्वीकार किया कि न हम प्रजा से और
पैसा लें और न मरम्मत कराएँ 9 तब यहोयादा
पुरोहित ने एक बक्सा लिया। उसने उसमें
एक छेद करके प्रभु के भवन में आने वालों
के दाहिने हाथ पर वेदी के पास रख दिया।
दरवाज़े की रखवाली करने वाले पुरोहित
उस में वह सारा पैसा डालने लगे जो प्रभु के
भवन में लाया जाता था। 10 जब उन लोगों ने
देखा कि बक्से में बहुत सा पैसा इकट्ठा हो
गया है, तब राजा के प्रधान और महापुरोहित
ने गिन कर थैलियों में रखा। 11 उस तौले गए
पैसों को उन्होंने काम लेने वालों के सुपुर्द
कर दिया, जो भवन के अधिकारी थे। इन
लोगों ने राशि बढ़ई और राज आदि को दी।
12 कुछ पैसा लकड़ी और गढ़े पत्थर को
खरीदने और टूट-फूट की मरम्मत में लगाया।
13 जो धन प्रभु के भवन में आ रहा था, उस
से चाँदी के तसले, चिमटे, कटोरे, तुरहियाँ
तथा सोने-चान्दी का कोई बर्तन न बना।
14 वह राशि काम करने वालों को दी गयी।
उन्होंने उसे लेकर प्रभु के भवन की मरम्मत
की। 15 काम करने वालों को देने के लिए
जिन के हाथ में रकम रहती थी, उन से
कोई हिसाब नहीं मांगा जाता था, क्योंकि वे
ईमानदारी से काम करते थे। 16 दोषबलियों
और अपराध बलियों के लिए मिलने वाली
राशि पुरोहितों को दी गयी, वह भवन के
काम में नहीं लगाया गयी। 17 फिर अराम के
राजा ने गत नगर पर हमला कर दिया और
उसे अपने कब्ज़े में कर लिया। इसके बाद
उसकी आँख यरूशलेम पर लगी। 18 तब
यहूदा के राजा योहाश ने उन सभी पवित्र
चीजों को जिन्हें उसके पूर्वज यहोशापात,
यहोराम और अहज्याह ने पवित्र किया था
अपने कब्ज़े में कर लिया। उसके अलावा
अपनी पवित्र की हुयी वस्तुएँ, प्रभु के भवन
के भण्डारों में और राजभवन में मिले सोने
को लेकर अराम के राजा हज़ाएल को भेज

दिया। 19 योहाश के दूसरे और काम भी हैं,
जो यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब
में दर्ज़ किए गए। 20 योआश के कर्मचारियों
ने राजद्रोह की योजना बनायी। उसे मिल्लो के
भवन में मार डाला गया। 21 इस में शिमात
का बेटा योजाकार और शोमेर का बेटा
यहोजाबाद जो उसके कर्मचारी थे, शामिल
थे। वहीं दाऊदपुर में उसे दफ़ना दिया गया।
और उसका बेटा अमस्याह उसकी जगह पर
शासन करने लगा।

13 अहिज्याह के बेटे यहूदा के राजा
योहाश के तेईसवें साल में येहू का
बेटा यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल पर
शासन करने लगा था। वह सत्रह साल तक
राजा रहा। 2 जो कुछ प्रभु को पसन्द नहीं
था, उसने वही किया। दूसरे शब्दों में उसने
नबात के बेटे यारोबाम की तरह ही अनुचित
काम किए। 3 इसलिए प्रभु को बहुत गुस्सा
आया और अराम के राजा हज़ाएल और
उसके बेटे बेन्हदद के वश में कर दिया। 4 तब
यहोआहाज ने प्रभु की दोहाई दी और प्रभु ने
उसकी सुनी भी। इसलिए कि अराम का राजा
इस्राएल पर अन्धेर कर रहा था। 5 इसलिए
प्रभु ने इस्राएल को आज़ाद करने वाला दिया।
इस तरह इस्राएली फिर से अपने तम्बुओं में
रहने लगे। 6 फिर भी वे ऐसी बुराई से दूर न
हुए, जो यारोबाम के समय में थी। यारोबाम
ने उन्हें रोका नहीं था लेकिन बढ़ावा दिया
था। उस समय शोमरोन में अशेरा मूर्ति कायम
हो रही थी 7 अराम के राजा ने यहोआहाज
की फ़ौज में से केवल पचास सवार, दस
रथ और दस हज़ार सिपाही छोड़ दिए थे।
ऐसा इसलिए क्योंकि उनको रौंद-रौंद कर
बर्बाद कर डाला था। 8 यहोआहाज के किए
हुए काम और उसकी बहादुरी, इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की किताब में है।
9 अन्त में यहोआहाज का देहान्त हो गया
और शोमरोन ही में उसे मिट्टी दे दी गयी।
उसकी जगह पर योआश राज्य करने लगा।
उसने सोलह साल तक राज्य किया। 10 यहूदा
के राजा योआश के सैंतीसवे राज्यकाल में
यहोआहाज का बेटा यहोआश शोमरोन में
इस्राएल पर राज्य करने लगा।उसने सोलह
साल तक राज्य किया। 11 जो कुछ प्रभु ने
मना किया था, वह सब वह करता रहा।
योआश के दूसरे काम और बहादुरी जो
उसने यहूदा के राजा अमस्याह से लड़कर
दिखाई सभी का वर्णन इस्राएली बादशाहों
की किताब में दर्ज है। 12,13 योआश के चल
बसने के बाद यारोबाम राजा बना। योआश
को शोमरोन में इस्राएली राजाओं वाली जगह
ही दफ़ना दिया गया। 14 इसी बीच एलीशा
बहुत बीमार हुआ और मरने वाला था।
इस्राएल का राजा उसके पास जाकर रोते हुए
कहने लगा, “हे मेरे पिता, हे मेरे पिता, हाय
इस्राएल के रथ और सवारो।” एलीशा उस
से बोला, “धनुष और तीर लाओ।” 15 वह
उसके पास धनुष-तीर लेकर आया। 16 तब
वह इस्राएल के राजा से बोला, “अपना हाथ
धनुष पर लगाओ।” इसके बाद एलीशा ने
अपने हाथ राजा के हाथों पर रखे। 17 फिर
वह बोला, “पूरब की खिड़की को खोलो।
ऐसा करने पर एलीशा ने उसे तीर छोड़ने के
लिए कहा। राजा ने वैसा किया भी। एलीशा
बोला, यह तीर प्रभु की ओर से आराम से
आजादी का निशान है। अपेक में तुम अराम
को मार ही डालोगे।” 18 फिर वह बोला,
“तीरों को ले आओ।” तीरों को लाने पर
उसने कहा, “ज़मीन पर मारो।” राजा ने तीन
बार मारा और ठहर गया। 19 एलीशा को
गुस्सा आया और बोला, “पाँच छैः बार तुम

को मारना चाहिए था, तब तुम अराम को
खत्म ही कर डालते। अब तो तुम तीन ही
बार उसे मारोगे। 20 एक दिन एलीशा चल
बसा और उसे दफ़ना दिया गया। एक साल
के बाद मोआब के दल देश में आए। 21 एक
दल ने एक आदमी को दफ़नाते देखा। तब
उन्होंने उस लाश को एलीशा की कब्र में डाल
दिया। एलीशा की हड्डियों को छूते ही वह
आदमी जी उठा और पैरों पर खड़ा हो गया।
22 यहोआहाज के जीवन भर अराम का राजा
हज़ाएल इस्राएल को सताता ही रहा 23 परन्तु
प्रभु को उन पर तरस आया और अब्राहम,
इसहाक और याकूब के साथ बान्धी वाचा
के कारण न ही उन्हें बर्बाद किया और न
ही अपने से दूर किया। 24 फिर अराम का
राजा हज़ाएल नहीं रहा। उस का बेटा बेन्हदद
उसके स्थान पर राजा 25 यहोआहाज के बेटे
यहोआश ने हज़ाएल के बेटे बेन्हदद के हाथ
से वे नगर फिर ले लिए, जिन्हें उसने युद्ध
करके उसके पिता यहोआहाज से ले लिए थे।
योआश ने उसको तीन बार जीतकर इस्राएल
के नगर फिर ले लिए।

14 इस्राएल के राजा यहोआहाज के बेटे
योआश के दूसरे साल में यहूदा के
राजा योआश का बेटा अमस्याह राजा बना।
2 जिस समय वह राज्य करने लगा, उसकी
उम्र पचीस साल थी। उसने यरूशलेम में
उन्तीस साल राज्य किया। अमस्याह की माँ
का नाम यहोअद्दीन था और वह यरूशलेम
की थी। 3 जो कुछ प्रभु की निगाह में सही था
वह करती रही फिर ऐसा नहीं जैसा दाऊद ने
किया। अपने पिता योआश के जैसे उसके
काम थे। 4 उसके समय में भी ऊँचे गढ़ों
को गिराया नहीं गया और लोग पूजा पाठ
करते रहे। 5 जब उसके हाथ में राज्य स्थिर
हो गया, तब बदले में उसने उन कर्मचारियों
की जान ले ली, जिन्होंने उसके पिता को
मारा था। 6 लेकिन उन खून करने वालों के
परिवार को यों ही छोड़ दिया। यह इसलिए
क्योंकि मूसा की आज्ञा-नियम के अनुसार
जिस ने गुनाह किया हो, उसी को सज़ा दी
जाए। पिता के अपराध का दण्ड बेटे को
नहीं और बेटे के अपराध का दण्ड पिता को
नहीं भुगतना है। 7 अमस्याह ने लोन की तराई
में दस हज़ार एदोमियों को मार डाला। युद्ध
करके उसने सेला नगर हथिया लिया। उस
का नाम बदलकर उसने योक्तेल रख दिया।
8 तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा योआश
के पास जो येहू का पोता और यहोआहाज
का बेटा था, दूतों से कहला भेजा, “आओ
हम एक दूसरे का मुकाबला करें।” 9 इस्राएल
के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह
के पास संदेश भेजा, “लबानोन की एक
झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास
कहला भेजा, कि उसके बेटे और देवदार की
बेटी की शादी हो जाए। इसी दौरान लबानोन
के जंगल का जानवर पास से निकाला और
झड़बेरी को रौंद डाला। 10 तुमने एदोमियों
पर जीत पायी है, इसलिए तुम्हारे मन में
घमण्ड आ गया है। इसी घमण्ड में तुम
पर घर पर ही ठहरो। तुम अपना नुकसान
और यहूदा की बेइज़्ज़ती क्यों कराना चाहते
हो? 11 बेतशेमेश लेकिन अमस्याह सुनने
के लिए तैयार नहीं था। तभी इस्राएल के
राजा ने हमला बोल दिया और उसने तथा
यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के
बेतशेमेंश में एक दूसरे का मुकाबला किया।
12 यहूदा इस्राएल से हार गया और सभी
अपने-अपने तम्बू में भागे। 13 तब इस्राएल
के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह
को जो अहज्याह का पोता और योआश का

बेटा था, बेतशेमेंश में पकड़ लिया। फिर
यरूशलेम जाकर वहाँ की शहरपनाह में से
एप्रैमी फ़ाटक से कोने वाले फ़ाटक तक चार
सौ हाथ गिरा दिए। 14 जितना सोना, चान्दी
और जो बर्तन प्रभु के भवन में और राजभवन
में मिले उन सब को और बन्धक बनाए लोगों
को लेकर शोमरोन को लौट गया। 15 इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में उसकी
बहादुरी के काम लिखे हुए हैं। 16 फिर उसके
मरने के बाद शोमरोन में उसे दफ़ना दिया
गया। उसकी जगह उस का बेटा यारोबाम
राज्य करने लगा। 17 यहोआहाज के बेटे
इस्राएल के राजा यहोआश की मौत के बाद
योआश का बेटा यहूदा का राजा अमस्याह
केवल पन्द्रह दिन ज़िन्दा रहा। 18 अमस्याह
के दूसरे काम यहूदा के राजाओं के इतिहास
की किताब में दर्ज हैं. 19 जब यरूशलेम में
उसके खिलाफ़ बलवे की योजना की गयी,
तब वह जान बचा-कर लाकीश भाग गया
था। उन लोगों ने उस का पीछा करके वहाँ
उसे मार डाला। 20 तब उसकी लाश को घोड़े
पर रख कर दाऊदपुर पहुँचाया गया जहाँ
उसे मिट्टी दी गयी 21 तब सारी यहूदी प्रजा
ने अजर्याह, जो सोलह साल का था उसके
पिता की जगह राजा बना दिया। 22 राजा
अमस्याह के मरने के बाद अजर्याह ने एलत
को मज़बूत करने के लिए यहूदा के अधिकार
में फिर कर लिया। 23 यहूदा के राजा योहाश
के बेटे अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवें साल में
इस्राएल के राजा योआश का बेटा यारोबाम
शोमरोन में शासन करने लगा। 24 जो कुछ
प्रभु की दृष्टि में अच्छा नहीं था, वह सब
उसने किया। 25 हमात की घाटी से लेकर
अराबा के तालाब तक इस्राएल की सरहद
उसने कायम कर दी। यह गोपेरवासी योना
नबी के कहने के अनुसार हुआ। 26 प्रभु
ने इस्राएल को बुरी हालत और असहाय
स्थिति देखी। 27 इसलिए कि प्रभु का यह
वायदा था कि वह इस दुनिया में से इस्राएल
का नाम मिटाएँगे नहीं, उन्होंने योआश के
बेटे यारोबाम की मदद से उनको आज़ाद
किया। 28 यारोबाम के दूसरे पराक्रम के काम
इस्राएल के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखे गए हैं। 29 यारोबाम के मरने के बाद
उस का बेटा ज़कर्याह गद्दी पर बैठा।

15 इस्राएल के राजा यारोबाम के
सत्ताइसवें वर्ष में यहूदा के राजा
अमस्याह का बेटा अजर्याह राजा बना था।
2 उस समय वह सोलह साल ही का था।
उसने यरूशलेम पर बावन साल राज्य किया।
उसकी माँ, यकोल्याह यरूशलेम की थी।
3 अपने पिता अमस्याह की तरह वह भी
सही जीवन जीता था। 4 लेकिन पूजा के ऊँचे
स्थानों को वैसे ही छोड़ दिया गया। 5 प्रभु
ने से ऐसे ताड़ना दी कि अपने मरने के दिन
तक वह कुष्ट रोगी रहा। वह एक अलग
घर में रहा करता था। राजपुत्र, योताम एक
अधिकारी की तरह लोगों का इन्साफ़ किया
करता था। यहूदा के राजाओं की किताब में
उसके कामों का ब्यौरा है। 6 अजर्याह के और
सभी काम क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास
की किताब में क्या नहीं लिखे हैं? 7 उसकी
मौत के बाद उसे भी दाऊदपुर में ही गाड़
दिया गया और उसकी जगह योताम आया।
8 यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें वर्ष
में यारोबाम का बेटा ज़कर्याह इस्राएल पर
शोमरोन में राज्य करने लगा। उसने छै महिने
राज्य किया। 9 अपने पूर्वजों की तरह उसने
भी वैसे ही बुरे काम किए। 10 याबेश के बेटे
शल्लूम ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके
उसको लोगों के सामने उसे मार कर खुद

राजा बन गया। 11 ज़कर्याह के दूसरे काम
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में हैं। 12 इस
तरह से येहू से प्रभु का कहा गया वचन पूरा
हुआ कि तुम्हारे परपोता के बेटे तक तुम्हारा
वंश इस्राएल की गद्दी पर बैठेगा और ऐसा
हुआ भी। 13 यहूदा के राजा उज्जियाह के
उन्तालीसवें साल में याबेश का बेटा शल्लूम
शासन करने लगा। वह महीने तक शोमरोन
में राज्य करता रहा। 14 क्योंकि गादी के बेटे
मनहेम ने, तिर्सा से शोमरोन को जाकर याबेश
के बेटे शल्लूम को वही मारा और उसकी
जगह राजा हो गया। 15 राजाओं के इतिहास
की किताब में शल्लूम के राजद्रोह आदि
के बारे में लिखा है। 16 तब मनहेम तिर्सा
गया। वहाँ उसने आस पास के लोगों और
तिप्सह को इस कारण जीत लिया क्योंकि
तिप्साहियों ने उसके लिए फ़ाटक न खोले
थे। उसने वहाँ की गर्भवती महिलाओं को
भी चीर डाला। 17 अजर्याह, यहूदा के राजा
के उन्तालीसवें वर्ष में गादी का बेटा इस्राएल
पर राज्य करने लगा था। वह दस साल तक
शोमरोन में राज्य करता रहा। 18 प्रभु जो नहीं
चाहते थे, वही उसने किया। 19 असीरिया
के राजा पूल ने देश पर हमला कर दिया।
मनहेम ने उसे हज़ार किक्कार चाँदी इसलिए
दी कि वह उस का मददगार होकर राज्य को
उसके अधीन ही बनाए रखे। 20 असीरिया के
राजा को यह चाँदी देने के लिए मनहेम ने
अमीर इस्राएलियों से इसे इकट्ठा किया था।
एक-एक आदमी को पचास-पचास शेकेल
चान्दी देनी पड़ी थी। तब असीरिया का राजा
देश छोड़कर वापस लौट गया। 21 इस्राएल
के राजाओं का इतिहास जहाँ हैं, वहीं उसके
बारे में भी लिखा है। 22 मनहेम की मौत
के बाद उस का बेटा पकन्याह राजा बन
गया। 23 यहूदा के राजा अजर्याह के पचासवें
साल में मनहेम का पुत्र पकन्याह शोमरोन में
इस्राएल पर राज्य करने लगा। और दो साल
तक किया। 24 प्रभु की निगाह में जो गलत
था उसने वही सब किया। 25 उसके सरदार
रमल्याह के बेटे पेकह ने उस से राजद्रोह
की गोष्ठी करके शोमरोन के राजभवन के
गुम्मट में उसको और उसके साथ अर्गोब
और अर्ये को मारा। पेकह के संग पचास
गिलादी आदमी थे। उसकी हत्या करके वह
खुद राजा बन गया। 26 पकन्याह के सभी
कामों का ब्यौरा हमें इस्राएल के राजाओं
की किताब में मिल जाता है। 27 यहूदा के
राजा अजर्याह के बावनवें साल में रमल्याह
का बेटा पेकह शोमरोन में राज्य करने लगा।
उसने बीस साल तक राज्य किया। 28 जो
कुछ प्रभु नहीं चाहते थे, वह सब उसने
किया। 29 इस्राएल के राजा पेकह के समय
में असीरिया का राजा आया। उसने इय्योन,
अबेल्बेत्माका, यानोह, केदेश और हासोर
नाम के नगरों को गिलाद, गलील यहाँ तक
कि नप्ताली के पूरे देश को ले लिया। वह
उनके खोजों को गुलाम बना कर भी ले गया।
30 उजिय्याह के बेटे योताम के बीसवें साल में
एला के बेटे होश ने रमल्याह के बेटे पेकह से
राजद्रोह की गोष्ठी करके उसकी जान ले ली
और स्वयं बादशाह बन बैठा। 31 दूसरे और
काम जो पेकह ने किए थे, वे सब इस्राएल
के राजाओं की किताब में दर्ज हैं। 32 रमल्याह
के बेटे इस्राएल के राजा पेकह के दूसरे साल
में यहूदा के राजा उजिय्याह का बेटा योताम
राजा बना। 33 उस समय उसकी उम्र पच्चीस
साल थी। उसने यरूशलेम पर सोलह साल
तक राज्य किया। उसकी माँ सादोक की
बेटी थी, जिस का नाम यरूशा था। 34 उसके
काम प्रभु की इच्छा के अनुसार ही हुआ
करते थे। अपने पिता उजिय्याह की तरह

वह सही आदमी था। 35 फिर भी जहाँ पर
पूजा-पाठ हुआ करता था, वे स्थान वैसे ही
बने रहे। योताम ही था जिस ने प्रभु के भवन
के ऊँचे फ़ाटक को बनवाया था। 36 उसके
सभी कामों का विवरण यहूदा के राजाओं की
इतिहास की पुस्तक में है। 37 उन्हीं दिनों में
प्रभु अराम के राजा रसीन को और रमल्याह
के बेटे पेकह को यहूदा के खिलाफ़ भेजने
लगे। 38 योताम के निधन के बाद उसे भी
उसके पुरखाओं के बीच गाड़ दिया गया।
उसके बाद उस का बेटा अहाज गद्दी पर
बैठा।

16 रमल्याह के बेटे पेकह के सत्रहवें
साल में यहूदा के राजा, योताम का
बेटा आहाज़ राज्य करने लगा। 2 उस समय
वह बीस साल का था। सोलह साल तक
उसने यरूशलेम में राज्य किया। अपने पूर्वज
दाऊद की तरह उस का जीवन नहीं था।
3 वह इस्राएल के तमाम राजाओं की तरह
था। ऐसे लोगों को जिन्हें प्रभु ने अपने सामने
से निकाल दिया था और घिनौने काम करने
वालों की तरह उसके काम थे। यहाँ तक
कि उसने अपने बेटे को भी कुर्बान कर
दिया था। 4 पूजा के स्थानों पर वह कुर्बानी
चढ़ाया करता था और धूप भी जलाया
करता था 5 तब अराम के राजा रसीन और
रमल्याह के बेटे इस्राएल के राजा पेकह
ने युद्ध के लिए यरूशलेम पर हमला बोल
दिया। अहाज को उन्होंने घेर लिया। लेकिन
युद्ध से उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। 6 तभी
अराम के राजा रसीन ने एलत को अराम के
अधिकार में करके, यहूदियों को वहाँ से भगा
दिया। अरामी लोग एलत गए। 7 आहाज़ ने
असीरिया के राजा तिगलतप्लेसर को संदेश
भेजा, “मुझे अपना दास या बेटा समझ कर
हमला करो। और मुझे अराम के राजा और
इस्राएल के राजा से बचाओ, जो मेरे खिलाफ़
हैं। 8 प्रभु के घर में और राज महल में जितना
सोना-चाँदी था उसे आहाज़ ने असीरिया के
राजा के पास ईनाम की तरह भेज दिया।
9 असीरिया के राजा ने उसकी बात मानकर
दमिश्क पर हमला भी बोल दिया। उसे
और उसके लोगों को गुलाम बना कर वह
कीर ले गया। साथ ही उसने रसीन राजा
को खत्म कर डाला। 10 इसके बाद राजा
आहाज़ असीरिया के राजा तिगलतप्लेसर से
मिलने दमिश्क गया। उसने वहाँ की वेदी
देखी। उसने उस का नक्शा नमूने के रूप में
उजिय्याह पुरोहित के पास भेज दिया। 11 इस
नमूने के मुताबिक उसने राजा आहाज़ के
दमिश्क से वापस आने तक एक वेदी भी
बना डाली। 12 अहाज ने वापस आने पर उस
पर कुर्बानी भी चढ़ाई। 13 उसी वेदी पर उसने
अपना अन्नबलि और होमबलि भी चढ़ाया
तथा खून छिड़का 14 पीतल की वेदी को
उसने भवन के सामने से हटा दिया। उसको
उसने अपनी वेदी और प्रभु के भवन के बीच
से हटा कर उस वेदी के उत्तर में रखा। 15 फिर
राजा आहाज़ ने उरिय्याह पुरोहित को आदेश
दिया कि सुबह और शाम के अन्नबलि, राजा
के होमबलि और अन्नबलि, साधारण लोगों
के अन्नबलि और अर्घ बड़ी वेदी पर चढ़ाए।
यह भी कि होमबलियों और मेल-बलियों का
सारा खून उस पर छिड़का जाए। 16 राजा
आहाज़ के इस निर्देष के आधार पर ही
अहिज्याह पुरोहित ने किया। 17 फिर राजा
आहाज़ ने कुर्सियों की पटरियों को काट
दिया। उसने हौदियों को उन पर से उतार
दिया और बड़े हौद को उन पीतल के बैलों
पर से जो उसके नीचे थे उतारकर पत्थरों
की फर्श पर रख दिया। 18 और विश्राम के

दिन के लिए जो छाई हुई जगह भवन में बनी
थी,और राजा के दाखिल होने के फाटक,
उनको उसने असीरिया के राजा के कारण
प्रभु के भवन से अलग कर दिया 19 आहाज़
के दूसरे कामों को यहूदा के राजाओं के
इतिहास के साथ ही रखा गया है। 20 आहाज़
की मौत के बाद दाऊदपुर ही में उसे दफ़नाया
गया। हिजकिय्याह तब से राज्य भी करने
लगा।

17 यहूदा के राजा आहाज़ के बारहवें
साल में एला के बेटे होशे ने शोमरोन
में इस्राएल पर शासन करना शुरू किया।
2 जो कुछ सही नहीं था, वह सब उसने
किया। फिर भी उतना नहीं, जितना उसके
पहले के राजाओं ने किया था। 3 असीरिया
के राजा शल्मनेसेर ने उस पर हमला बोल
दिया। होशे डर कर उसे ईनाम देने लगा।
4 लेकिन असीरिया के राजा ने यह जान लिया
कि होशे राजद्रोह कर सकता है, क्योंकि
मिस्रियों राजा के पास संदेशवाहक भेजे थे।
हर साल जो भेंट वह असीरिया के राजा
को भेजता था, उसने वह भी बन्द कर दी।
इसलिए असीरिया के राजा ने उसे जेल में
डलवा दिया। 5 फिर देश पर शल्मनेसेर ने
आक्रमण कर दिया। तीन साल तक शोमरोन
घिरा रहा। 6 होशे के नौवें साल में असीरिया
के बादशाह ने शोमरोन पर कब्ज़ा कर लिया।
उसने इस्राएलियों को असीरिया के हलह
और गोजान की नदी हाबोर के पास और
मादियों के नगरों में बसा दिया। 7 क्योंकि
हालांकि इस्राएलियों को उनके प्रभु ने गुलामी
से आज़ाद किया था, लेकिन फिर भी वे
दूसरे देवी-देवताओं की आराधना करने लगे
थे। 8 जिन लोगों को उनके सामने प्रभु ने
निकाल दिया था, उन्हीं के तौर तरीकों को
इस्राएलियों ने अपना लिया था। 9 इस्राएली
विश्वासयोग्य न रहे, उन्होंने प्रभु के खिलाफ़
काम किए। वे सब जगह पूजा-पाठ करने
लगे। 10 ऊँची पहाड़ियों पर हरे पेड़ों के नीचे
उन्होंने अशेरा की वन्दना करनी शुरू कर
दी। 11 उन्होंने धूप-अगरबत्ती जलानी शुरू
कर दी और प्रभु को गुस्सा दिलाया। 12 प्रभु
ने उन्हें मूर्ति पूजा करने के लिए मना किया
था, लेकिन वे माने नहीं। 13 फिर भी प्रभु
ने अपने नबियों और दर्शी लोगों को भेजा।
उन्होंने इस्राएलियों को बताया कि वे दिए
गए नियमों और आज्ञाओं को मानें। 14 लेकिन
वे ज़िद्दी बने रहे और अपने पूर्वजों की तरह
काम करते रहे। 15 उन्होंने वाचा की परवाह
नहीं की और बेकार की बातों में लगे रहे।
वे लोग अपने चारों ओर रहने वाले लोगों
की तरह काम करते रहे, जब कि प्रभु ने
उन्हें मना किया था। 16 प्रभु की आज्ञाओं
को उन्होंने बेकार समझा। उन लोगों ने दो
बछड़ों की मूर्ति बनायी और अशेरा को भी
खड़ा किया। आकाश के तारों की वे पूजा
करने के साथ, बाआल को भी पूजने लगे।
17 वे लोग अपने बेटी-बेटी को कुर्बान किया
करते थे। ज्योतिष लोगों से सलाह मशविरा
लेते थे। जादू-टोना भी उन में हुआ करता था।
यह सब कुछ करने के लिए मानो उन लोगों
ने अपने आपको बेच डाला था। इन सभी
बातों की वजह से प्रभु गुस्सा थे। 18 गुस्से
में प्रभु ने उन्हें अपने पास से दूर कर दिया।
केवल यहूदा का कबीला बच पाया था।
19 यहूदा के लोग भी इस्राएल के रास्ते पर
चलने लगे। 20 तब प्रभु ने इस्राएल की सारी
सन्तान को छोड़ दिया, उन्हें लुटने दिया।
आखिर में उन्हें अपने से दूर कर दिया।
21 प्रभु ने इस्राएल को दाऊद के घराने के
हाथ से छीन लिया। उन लोगों ने नबात

के बेटे यारोबाम को अपना राजा बनाया।
यारोबाम ने इस्राएल को प्रभु परमेश्वर से दूर
करवाया। 22 इसलिए जैसे गुनाह यारोबाम ने
किए थे, वैसे ही इस्राएली भी करते गए।
23 आखिर में प्रभु ने इस्राएल को छोड़ दिया।
यह बात वह नबियों के द्वारा पहले कह
चुके थे। इस तरह इस्राएल गुलाम की तरह
असीरिया ले जाया गया। 24 असीरिया का
राजा बाबेल, कूना, अव्वाहमात और सपवैम
से लोगों को लाया। इस्राएलियों की जगह
पर शोमरोन में उन लोगों को बसा दिया।
25 इसलिए कि ये लोग प्रभु से डर कर जीवन
नहीं बिताते थे, उन्होंने उनके बीच शेर भेजना
शुरू किया, जो उन्हें खा जाने लगे। 26 यह
खबर असीरिया के पास पहुँचायी गयी। ऐसा
शक किया जा रहा था कि शोमरोन के नगरों
के देवता को क्या पसन्द है और क्या नहीं,
शायद यह उन्हें नहीं मालूम। 27 तब असीरिया
के राजा ने आदेश दिया कि जिन पुरोहितों
को वे उस देश से ले आए थे, उन में से
एक को वहाँ पहुँचा दिया जाए, जो वहीं
रहेगा। वही उनको उस देश के रीति-रिवाज़
सिखाएगा। 28 तब जिन पुरोहितों को शोमरोन
से निकाला गया था, उन में से एक आकर
बेतेल में रहने लगा। उसने वहाँ के लोगों
को सिखाना शुरू किया कि प्रभु को कैसे
खुश रखें। 29 फिर भी एक जाति के लोगों
ने अपने-अपने देवता बना कर, अपने-अपने
बसाए हुए नगर में उन ऊँचे स्थानों के भवनों
में रखा जो शोमरोनियों ने बसाए थे। 30 बाबेल
के लोगों ने सुक्कोत बनोत को, कूत के लोगों
ने नेर्गल को, हमात के लोगों ने हशीमा
को, 31 अव्वियों ने निमज और ततीक को
स्थापित किया। सपवैमी लोग अपने बेटों को
अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक नाम सपवैम के
देवताओं के लिए होम करके चढ़ाने लगे।
32 वे लोग ऊँचे स्थानों के पुरोहित भी नियुक्त
कर देते थे। वे बलि भी चढ़ाते थे। 33 वे लोग
अपने-अपने देवताओं का भजन-कीर्तन भी
करते रहे। 34 अपने पहले की प्रथाओं को वे
मानते रहे। 35 वे लोग प्रभु द्वारा दिए निर्देशों से
कोई रिश्ता नहीं रखते थे। प्रभु ने उन से यह
वाचा बान्धी थी, कि वे पराए देवताओं से न
तो डरेंगे और न ही उन्हें पूजेंगे और न कुर्बानी
चढ़ाएँगे। 36 प्रभु जो अपनी ताकत से मिस्र
की गुलामी से लाए थे, उन्हीं से उन लोगों को
डरना था, उन्हीं की आराधना आदि करनी
थी। 37 मिली हुयी आज्ञाओं और नियमों को
उन्हें मानना है और चौकसी बरतनी चाहिए
थी। दूसरे देवी-देवताओं से उन्हें डरना नहीं
था। 38 प्रभु से जोड़े गए सम्बन्ध को उन्हें याद
रखना था। 39 केवल अपने प्रभु परमेश्वर
को इज़्ज़त देनी थी, वही सारे दुश्मनों से
आज़ाद करते हैं। 40 इसके बावजूद इन लोगों
ने नहीं सुनी और मनमानी करते रहे। 41 ये
लोग अपनी खुदी हुयी मूर्तियों की पूजा करते
रहे।

18 एलाके षबेटे इस्राएल के राजा होशे
के तीसरे साल में यहूदा के राजा
आहाज़ का बेटा हिजकिय्याह राजा बना।
2 उस समय उसकी उम्र पचास साल थी।
उसने यरूशलेम पर उन्तीस साल तक शासन
किया। उसकी माँ का नाम अबी था। अबी
के पिता का नाम ज़कर्याह था। 3 उसने दाऊद
की तरह सही जीवन जिया। 4 ऊँचे स्थानों को
उसने बर्बाद किया और अशेरा की मूर्तियों
को तोड़ डाला। मूसा द्वारा बनाए गए पीतल
के साँप के सामने इस्राएली तब तक धूप
जलाते थे। उसने उसे चूर-चूर कर दिया।
5 उस का भरोसा इस्राएल के प्रभु परमेश्वर
पर था। उस तरह का राजा यहूदा में न

पहले हुआ था और न बाद में कभी। 6 वह
प्रभु से लिपटा रहा और उनके रास्ते पर
चलना नहीं छोड़ा। मूसा द्वारा मिली आज्ञाओं
का वह पालन करता रहा। 7 इसलिए प्रभु
भी उसके साथ-साथ थे। उसके सभी काम
सफल हुआ करते थे। असीरिया के राजा
के खिलाफ़ उसने बलवा किया और उसकी
अधीनता को नकार दिया। 8 पलिश्तियों को
उसने गाज़ा और उसकी सीमा तक, पहरूओं
के गुम्मट और गढ़ वाले नगर तक मारा।
9 राजा हिजकिय्याह के चौथे साल में जो एला
के बेटे इस्राएल के राजा होशे का सातवाँ
साल था, असीरिया के राजा शल्मनेसेर ने
शोमरोन पर हमला कर दिया। 10 तीन साल
के बीत जाने पर उन्होंने उस पर कब्ज़ा भी
कर लिया। इस तरह से हिजकिय्याह के
छठवें साल में जो इस्राएल के राजा होशे
का नौवाँ साल था, शोमरोन हथिया लिया
गया। 11 तब असीरिया का राजा इस्राएल
को गुलाम बना कर असीरिया ले गया।
उसने इस्राएलियों को हलह में और गोजान
की नदी हाबोर के पास और मादियों के
नगरों में उन्हें बसाया। 12 यह सब इसलिए
हुआ क्योंकि इस्राएलियों ने मनमानी की। उन
लोगों ने बाँधी गयी वाचा को तोड़ा। दी हुयी
आज्ञाओं के खिलाफ़ जीवन बिताया।उन्होंने
प्रभु के साथ के सम्बन्ध को ठुकराया। मूसा
द्वारा प्रभु से मिले आदेशों को तुच्छ जाना।
13 हिजकिय्याह राजा के चौदहवें साल में
असीरिया के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सभी
मज़बूत नगरों पर हमला करके उन्हें हथिया
लिया। 14 तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह
ने असीरिया के पास लाकीश को कहलवा
भेजा, “मुझ से गलती हुयी, मेरे पास से
वापस चले जाओ। जो बोझ तुम मुझ पर
डालोगे, उसे मैं उठाऊँगा।” फिर असीरिया
के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह
के लिए तीन सौ चाँदी और तीस किक्कार
सोना ठहराया। 15 तब जितनी चान्दी प्रभु के
भवन और राजमहल के भण्डारों में मिली,
वह सब हिजकिय्याह ने उसे दे दी। 16 उस
समय हिजकिय्याह ने मन्दिर के दरवाज़ों
से और उन खम्भों से भी जिन पर यहूदा
के राजा हिजकिय्याह ने सोना मढ़ा था,
सोने को निकाल कर असीरिया के राजा को
दिया। 17 तौभी असीरिया के राजा ने तर्तान,
रबसारीस और रबशाके को बड़ी फ़ौज देकर
लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह
राजा के खिलाफ़ भेज दिया। इसलिए वे
यरूशलेम को गए। वहाँ पहुँचकर ऊपर के
पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की
सड़क पर जाकर खड़े हो गए। 18 जब उन्होंने
राजा को पुकारा, तब हिजकिय्याह का बेटा
एल्याकीम जो राजघराने की सेवा में था और
शेब्ना मंत्री तथा आसाप का बेटा योआह, जो
इतिहासकार था, ये तीनों उनके पास बाहर
निकल गए। 19,20 रबशाके उन से बोला,
“हिजकिय्याह को बताओ कि असीरिया का
राजा पूछ रहा है कि उस का भरोसा किस
पर है। वह कहता है कि उसके पास युद्ध
के लिए ताकत और कौशल दोनों ही हैं।
आखिर मेरे खिलाफ़ बलवे की हिम्मत उसे
कैसे हुयी।” 21 सुनो, तुम कुचले हुए सरकण्डे
अर्थात् मिस्र पर भरोसा कर रहे हो। यदि कोई
उस से मदद की उम्मीद करेगा, तो धोखा
खाएगा। जितने लोग मिस्र और उसके राजा
पर भरोसा रखते हैं, सभी का यही हाल होगा।
22 यदि तुम कहो कि तुम तुम्हारा भरोसा प्रभु
पर है, तो क्या यह वही नहीं जिस के ऊँचे
स्थानों और वेदियों को हिजकिय्याह ने हटा
कर यरूशलेम से कहा, कि वे लोग इस
यरूशलेम की वेदी के सामने सिर झुकाएँ।

23 इसलिए अब मेरे मालिक असीरिया के
राजा के पास कुछ बन्धक रखो, तब मैं तुम्हें
दो हज़ार घोड़े दूँगा। क्या तुम उन घोड़ों पर
सवार चढ़ा सकोगे। 24 फिर तुम मेरे मालिक
के छोटे से छोटे कर्मचारी की बात न मानकर
रथों और सवारों के लिए मिस्र पर तकिया
कर रहे हो? 25 क्या बिना प्रभु की अगुवाई
पाए। इस जगह को बर्बाद करने के लिए मैंने
हमला किया है? प्रभु का मुझे यह आदेश
मिला था कि मैं इस देश पर हमला करके
इस बर्बाद कर डालूँ। 26 तब हिजकिय्याह के
बेटे एल्याकीम और शेब्ना योआह ने रबशाके
से कहा, "अपने सेवकों से अरामी भाषा में
बातचीत करो, क्योंकि उसे हम समझ सकते
हैं। क्योंकि शहरपनाह पर लोग बैठे है और
वे यहूदी भाषा समझते हैं। 27 रबशाके बोला,
"क्या मेरे मालिक ने मुझे तुम्हारे स्वामी के
पास, या तुम्हारे पास ये बातें बताने को भेजा
है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं
भेजा, जो शहरपनाह पर बैठा करते हैं, ताकि
तुम्हारे संग उनको भी अपनी गंदगी[a] खानी
पड़े और अपना पेशाब पीना पड़ें? 28,29 तब
रबशाके खड़ा हो गया। उसने यहूदी भाषा
में ऊँची आवाज़ में कहा, "महाराजाधिराज
असीरिया के राजा की सुनो। उनका कहना
यह है कि हिजकिय्याह तुम्हें बहका न सके।
वह मेरे हाथ से तुम लोगों को न बचा पाएगा।
30 वह तुम्हारे विश्वास को यह कह कर प्रभु
पर न करवाए कि प्रभु हम को बचाएँगे या
हम असीरिया के राजा के अधिकार में कभी
न जाएँगे। 31 हिजकिय्याह क्या कहता है
यह अनसुनी कर डालो। असीरिया का राजा
कहता है, "ईनाम देकर मुझे खुश करो। हर
एक जन अपने अंगूर और अंजीर की फ़सल
का मज़ा उड़ाए और अपने कुण्ड का पानी
पी कर प्यास बुझाए। 32 तब मैं आऊँगा और
ऐसे देश में ले जाऊँगा, जो तुम्हारे ही देश की
तरह अन्न और दाखमधु का देश है। यहाँ
अंगूर के बगीचे और जलपाई और शहद
है। वहाँ तुम आनन्द से रहोगे। इसलिए जब
हिजकिय्याह तुम्हें यह कह कर भरमाए कि
हम को प्रभु बचाएँगे, तो उसकी सुनना मत।
33 यह बताओ, क्या दूसरे देशों के देवता
अपने देश को असीरिया के राजा के हाथ
से बचा पाए हैं? 34 कहाँ गए हमात और
अपोद के देवता? सपवैम, हेना और इव्वा
के देवता कहाँ हैं? क्या वे शोमरोन को
मेरे हाथ से बचा पाए? 35 सारी दुनिया में
ऐसे देवता कौन सा है जो किसी देश को
मेरे हाथ से बचा पाया है? फिर क्या प्रभु
यरूशलेम को मेरे हाथ से बचा सकते हैं?"
36 ये सब कुछ लोग सुनते रहे और कुछ
जवाब न दिया। इसलिए कि यह राजा का
आदेश था कि सभी लोग खामोश रहेंगे।
37 तब हिजकिय्याह का बेटा एल्याकीम जो
राजघराने में ही सेवा कर रहा था और शेब्ना
मंत्री और इतिहासकार योआह ने अपने
कपड़े फाड़े हुए हिजकिय्याह के पास जाकर
रबशाके की बातें कह दी।

19 जब ये बातें हिजकिय्याह के कानों
में पड़ी, तो वह अपने कपड़े फाड़
कर टाट ओढ़ कर प्रभु के भवन में गया।
2 उस समय एल्याकीम, शेब्ना मंत्री, याजकों
पुरोहितों में बुज़ुर्ग अपने ऊपर टाट ओढ़े हुए
थे। ये सभी आमोस के बेटे यशायाह नबी
के पास पहुँचे। 3 वहाँ जाकर उन लोगों ने
हिजकिय्याह का यह संदेश दिया कि आज
का दिन परेशानी और बेइज्ज़ती का है।
हालत वैसी है जैसे कि बच्चे को जन्म देते

[a] **18.27** विष्ठा

समय का माँ के पास बल ही नहीं है। 4 यदि
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर रबशाके की उन सभी
बातों को सुनें जो असीरिया के राजा ने उसको
कहने के लिए भेजा था और जो बातें तुम्हारे
प्रभु ने सुनीं हैं, उन्हें डपटे। इसलिये तुम इन
बचे हुए लोगों के लिए बिनती करो। 5 जब
हिजकिय्याह के कर्मचारी यशायाह के पास
आए, 6 तब यशायाह ने उन लोगों से कहा,
“जाकर अपने स्वामी से कह दो कि जो कुछ
बेइज्ज़ती की बातें तुमने सुनी है, उन से वह
न डरे। 7 मैं उसके मन कुछ ऐसा करूँगा कि
वह कुछ खबर सुन कर वापस अपने देश को
लौट जाए। उसी के देश में उसे मैं तलवार से
मरवा डालूँगा।” 8 तब रबशाके ने लौटकर
असीरिया के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध
करते पाया। 9,10 जब उसने कूश के राजा
तिर्हाका के बारे में यह सुना कि वह मुझ
से लड़ने के लिए निकला है, हिजकिय्याह
के पास दूतों को यह कह कर भेजा, “तुम
यहूदा के राजा हिजकिय्याह से कहना कि
जिस प्रभु पर तुम भरोसा कर रहे हो,वह
यह कह कर तुम्हें धोखा न दे कि तुम लोग
असीरिया के राजा के कब्ज़े में नहीं जाओगे।
11 तुम्हारे कानों में यह बात पड़ चुकी है कि
असीरिया ने दूसरे देशों का क्या हाल कर
डाला है, इसलिए तुम क्यों सोचते हो कि
बच जाओगे? 12 गोजान, हारान, रेसेप और
तलस्सार में रहने वाले एदेनी, जिन राष्ट्रों को
मेरे पूर्वजों ने बर्बाद किया था, क्या उन में से
किसी देश के देवताओं ने उन्हें बचा लिया?
13 हमात, अर्पाद और समवैम के राजा कहाँ
गए?” इस खत को हिजकिय्याह ने दूतों के
हाथ से लेकर पढ़ा। 14 उसने प्रार्थना भवन
में जाकर उस खत को फैला दिया। 15 वह
प्रभु से कहने लगा, “हे इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर! करूबों पर बैठने वाले। दुनिया
के सभी राजाओं से बढ़ कर आप ही हैं।
पृथ्वी आकाश को आप ही ने बनाया है।
16 हे प्रभु देखिए और सुनिए, उसने सदा काल
के प्रभु की बेइज़्ज़ती की है। 17 हे प्रभु, इस
में कोई शक नहीं है कि कि असीरिया के
राजा देशों को बर्बाद करते आए हैं। 18 उसने
उनके लकड़ी और पत्थर के देवताओं को
आग में भस्म किया है, क्योंकि वे प्रभु न
थे। 19 इसलिए अब हे प्रभु, प्रभु हमें उनके
हाथ से बचाईए, ताकि इस धरती पर रहने
वाले, जान सकें कि आप ही प्रभु हैं। 20 तब
यशायाह नबी ने हिजकिय्याह को यह संदेश
भेजा कि इस्राएल के प्रभु परमेश्वर का
कहना यह है कि उसकी जो प्रार्थना असीरिया
के राजा के बारे में है, उसे सुन लिया गया है।
21 उस विषय यरूशलेम के लोग तुम्हें तुच्छ
जानते हैं और तुम मज़ाक का एक विषय हो।
22 तुमने जो बेइज़्ज़ती की है वह किसकी है?
तुम्हारे मुँह के बड़े बोल और घमण्ड किस के
खिलाफ़ हैं? यह सब तुमने प्रभु परमेश्वर के
खिलाफ़ ही किया है। 23 अपने संदेशवाहकों
के द्वारा तुमने प्रभु की निन्दा करके कहाँ
हैं, “ढेर सारे रथों को लेकर मैं पहाड़ों की
चोटियों पर और लबानोन के बीच तक चढ़
आया हूँ। मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारों और
बढ़िया-बढ़िया सनौवरों को काट दूँगा। सब
से ऊँचे टिकने की जगह जहाँ उपजाऊ बगीचे
होंगे वहीं दाखिल होऊँगा। 24 मैंने परदेश
का पानी पिया और मिस्र की नहरों में पाँव
धरते ही उन्हें सुखा डालूँगा। 25 क्या यह बात
तुम्हारे कानों में नहीं पड़ी कि पुराने समय से
मैंने यही तय किया है? तैयारी करके मैंने उन्हें
पूरा भी किया है कि मज़बूत स्थिर नगरों को
उजाड़ दे। 26 इस कारण वहाँ के रहने वालों
की हिम्मत जाती रही। वे शर्मिन्दा भी हुए।
वे मैदान के छोटे-छोटे पेड़ों की हरी घास

और छत पर की घास और ऐसे अनाज की
तरह हो गए, जो बढ़ने से पहले सूख जाती
है। 27 तुम्हारा बैठा रहना, चल देना और
लौट आना जानता हूँ। यह भी कि तुम मुझ
पर अपना गुस्सा भड़काते हो। 28 इसलिए
कि तुम पर अपना गुस्सा भड़काते हो और
तुम्हारे घमण्ड की बात मैंने सुन ली है, मैं
तुम्हारी नाक में नकेल डाल कर और मुँह
में लगा कर, जिस रास्ते से तुम आए हो,
उसी रास्ते से वापस भेज दूँगा। 29 तुम्हारे
लिए निशान यह होगा कि जो कुछ उगेगा,
उसे तुम इस साल तो खा सकोगे और दूसरे
साल जो पैदा होगा उसे तीसरे साल तुम
बीज बो सकोगे और फ़सल काट सकोगे।
अंगूर के बगीचे तुम लगा कर अंगूर भी खा
पाओगे। 30 यहूदा के बचे हुए लोग फिर से
जड़ पकड़ते हुए बढ़ते जाएँगे। 31 क्योंकि
यरूशलेम में से बचे हुए और सिय्योन पहाड़
के भागे हुए लोग निकलेंगे। यह काम प्रभु का
इसलिए होगा क्योंकि वह जलन रखने वाले
प्रभु हैं। 32 इसलिए उनके शब्द असीरिया के
राजा के लिए ये हैं, “वह एक तीर भी तुम्हारे
खिलाफ़ नहीं चला पाएगा। न ही ढाल लेकर
वह मुकाबला करने पाएगा। 33 जिस रास्ते
से वह आया है, उसी से उसे वापस जाना
पड़ेगा। वह इस नगर में दाखिल तक नहीं हो
पाएगा। 34 मैं अपनी खातिर और दाऊद की
खातिर इस नगर को बचाऊँगा। 35 उसी रात
प्रभु का दूत निकला और असीरियियों की
छावनी में एक लाख पचासी हज़ार आदमियों
को मार डाला। जब लोगों ने सुबह अपनी
नज़र डाली, तो लाश ही लाश दिखायी दीं
36 तब असीरिया का राजा सन्हेरीब चला
गया और नीनवे में जाकर रहने लगा। 37 एक
दिन वह अपने देवता निस्त्रोक के मन्दिर में
पूजा-पाट कर रहा था कि अदेम्मेलेक और
सरेसेर ने उसे तलवार भोंक कर मार डाला।
वे खुद अरारात भाग गए। उसके बाद उस
का बेटा एसर्हद्दोन राजा बन गया।

20 तभी हिजकिय्याह बीमारी की वजह
से मरने पर था। आमोस का बेटा
यशायाह उसके पास पहुँचकर कहने लगा,
“तुम बचने वाले नहीं हो, इसलिए अपने
परिवार को जो आदेश देना है, दे दो।” 2,3 तब
राजा ने अपना चेहरा दीवार की ओर करके
प्रभु से माँगने लगा, “देखिए, मैं ईमानदारी
और सच्चाई से जीवन बिताता रहा हूँ। मैं
आपको पसन्द आने वाली बातें ही करता
रहा हूँ।” यह कह कर वह फूट-फूट कर रोने
लगा। 4,5 इसी बीच यशायाह बीच नगर तक
पहुँचा ही नहीं था कि प्रभु ने हिजकिय्याह
से यह कहने के लिए कहा, “दाऊद के
प्रभु का यह कहना है, “मैंने तुम्हारी बिनती
सुनी है और आँसुओं को देखा है और मैं
तुम्हें ठीक कर रहा हूँ। प्रभु के प्रार्थना भवन
में तुम परसों जा पाओगे। 6 मैं तुम्हारी उम्र
पन्द्रह साल बढ़ा दूँगा तुम्हें और इस नगर
को मैं असीरिया के राजा से बचाऊँगा।
अपने और दाऊद की खातिर मैं इस नगर
की रक्षा करूँगा।” 7 तब यशायाह ने उसे
फोड़े पर अंजीर लगाने को कहा। ऐसा करने
पर वह ठीक हो गया। 8 हिजकिय्याह का
सवाल यह था कि उसके ठीक हो जाने
और प्रभु के भवन में जाने का क्या निशान
होगा। 9 यशायाह का जवाब था, “धूप घड़ी
की छाया दस अंश आगे सरक जाएगी या
दस अंश कम हो जाएगी। 10 हिजकिय्याह
बोला, “छाया का दस अंश आगे जाना तो
मुश्किल नहीं है इसलिए ऐसा हो कि छाया
दस अंश पीछे लौटे।” 11 तब यशायाह ने प्रभु
से प्रार्थना की और वैसा ही हुआ। 12 उन

दिनों में बलदान के बेटे बरोदक-बलदान ने
जो बाबेल का राजा था, हिजकिय्याह की
बीमारी का समाचार सुन कर चिट्ठी भेजी और
ईनाम भी। 13 हिजकिय्याह ने उनको अपनी
कीमती चीजों, चान्दी, सोना, खुशबूदार तेल
इत्र, तेल, हथियारों का भण्डार सभी कुछ
दिखा डाला। 14 तब यशायाह भविष्यद्वक्ता
ने हिजकिय्याह के पास जाकर उन लोगों
के बारे में जानकारी मांगी। हिजकिय्याह
ने बताया कि वे लोग बाबेल से आए थे।
15 "उस ने पूछा, "उन्हें क्या-क्या दिखाया
गया?" हिजकिय्याह का जवाब था कि
उसके महल की सब चीजें उन्होंने देख ली
हैं। 16,17 यशायाह बोला, "प्रभु क्या कहना
चाहते हैं, सुनो, ऐसा समय आएगा जब कि
तुम्हारे महल की हर चीज़ को चाहे वह
कितनी पुरानी क्यों न हो, बाबेल उठा ले
जाएगा। 18 तुम्हारे वंश में होने वाले बेटों में से
तमाम को वे गुलाम बना कर ले जाएँगे। इन्हें
नपुंसक बना कर राजभवन में रखा जाएगा।
19 हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "तुम
जो प्रभु के वचन कह रहे हो, ठीक हैं। मेरे
राज्य के समय में शान्ति बनी रहेगी या नहीं?"
20 हिजकिय्याह की बहादुरी के काम और
जो कुछ उसने लोगों के लिए किए, यहूदा के
राजाओं की किताब में लिखे हैं। 21 आखिर
में वह चल बसा और उसके स्थान पर उस
का बेटा मनश्शे राजा बन गया।

21 मनश्शे ने जब राज्य करना आरम्भ
किया, वह केवल बारह साल का
था। उसने पचपन साल तक यरूशलेम से
शासन किया। उसकी माँ का नाम हेप्सीबा
था। 2 मनश्शे ने दूसरी जातियों के से घिनौने
काम किए। 3 जिन पूजा के ऊँचे स्थानों को
उसके पिता ने गिरवा दिया था, उसने फिर से
बनाया। इस्राएल के राजा आहाब की तरह
बाआल के लिए वेदियों और एक अशेरा
मूर्ति बनवाई। वह नक्षत्रों की भी पूजा-पाट
करता रहा। 4 उसने प्रभु के भवन में वेदियाँ
बनायी, जिन के बारे में प्रभु ने कहा था
कि वह अपना नाम रखेंगे। 5 उसने प्रभु के
भवन के दोनों आंगनों में आकाश के नक्षत्रों
के लिए वेदियाँ बनवायीं। 6 उसने अपने बेटे
की कुर्बानी भी की। शुभ-अशुभ मुहूर्त को
मानना, टोना करना, ओझा और भूतसिद्धी
वालों से मदद लेना उसके लिए सामान्य बात
थी। इन सभी कामों के कारण प्रभु को उस
पर बहुत गुस्सा आया। 7 जो भवन प्रभु की
महिमा के लिए बनाया गया था, वहाँ उसने
अशेरा की खुदवायी गयी मूरत को स्थापित
किया। 8 प्रभु ने कहा था कि यदि उनके
लोग आज्ञाओं-नियमों का पालन करेंगे, तो
उन्हें इधर-उधर मारे-मारे फिरते नहीं रहना
पड़ेगा। 9 लेकिन उन्होंने बलवा किया और
मनश्शे ने तो दुष्टता की सभी सीमाएँ तोड़
डालीं। 10 इसलिए प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के
द्वारा कहा, 11 "यहूदा के राजा मनश्शे ने
ऐसे घिनौने काम किए जो उस से पहले
एमोरियों ने भी नहीं किए थे। उसने यहूदियों
से मूर्तियों की पूजा करवा कर बड़े अपराध
में फँसा दिया है। 12 इसलिए इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर का कहना है, "मैं यहूदा और
यरूशलेम पर ऐसी मुसीबत लाऊँगा, कि जो
भी सुनेगा, दंग रह जाएगा। 13 जो नापने की
डोरी मैंने शोमरोन पर डाली और जो साहुल
आहाब के परिवार पर लटकाया है, मैं वही
यरूशलेम पर डालूँगा। मैं यरूशलेम को इस
तरह पोछूँगा। जैसे कोई थाली को पोंछ कर
उलट देता है। 14 मैं अपने बचे लोगों को त्याग
कर दुश्मनों के सुपुर्द कर दूँगा। वे लोग अपने
दुश्मनों के लिए लूट और दौलत बन जाएँगे।

15 इसका कारण यह है कि जबसे उनके
पूर्वज मिस्र देश से निकले, तब से आज तक
वे वही सब करते आ रहे हैं, जो मेरी आँखों
में बुरा है और जिस से मुझे गुस्सा आता है।
16 मनश्शे ने केवल वह सब कराया जो प्रभु
के निकट बुरी है, लेकिन उसने बेगुनाहों की
जान भी ली। मनश्शे के और दूसरे काम तथा
गुनाह जो उसने किए थे, यहूदा के राजाओं
की किताब में दर्ज हैं। 17,18 उसकी मौत के
बाद उस का बेटा आमोन तख्त पर बैठा
19 आमोन केवल बाईस साल का था, जब
वह राजा बना था। उसने यरूशलेम पर दो
साल तक शासन किया। उसकी माँ का नाम
मशुल्लेमेत था। वह योत्बावासी हारून की
बेटी थी। 20 प्रभु जो नहीं चाहते थे, वह सब
गलत काम उसने किए। 21 उसकी जीवन
शैली ठीक वैसी ही थी, जैसी उसके पिता
की थी। वह भी उन्हीं मूरतों की वन्दना
करता था, जिन की उस का पिता किया
करता था 22 उसने अपने बुज़ुर्गों[a] के प्रभु
को छोड़ दिया और प्रभु के रास्तों पर नहीं
चला। 23 आमोन के कर्मचारियों ने बलवे की
योजना बना कर एक दिन उसे मौत के घाट
उतार दिया। 24 इसके बाद लोगों ने उनकी
जान ले ली, जिन्होंने आमोन के खिलाफ़
योजना बनायी थी और उसे मार भी डाला
था। आमोन के बाद उसके बेटे योशिय्याह
को राजा बनाया गया। 25 आमोन के दूसरे
काम जो उसने किए थे, वे सभी यहूदा के
राजाओं की किताब में हैं। 26 उसे उज्जर के
बगीचे में उसी की कब्र में दफ़नाया भी गया।
और उसका पुत्र योशिय्याह उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

22 योशिय्याह की उम्र केवल आठ
साल की थी, जब उसे राजा का पद
मिला। उसने यरूशलेम में रह कर इकतीस
साल तक राजकाज संभाला। उसकी माँ
यदीदा बोस्कतवासी अदाया की बेटी थी
2 प्रभु परमेश्वर जो चाहते थे, वह वही किया
करता था। दाऊद की जीवन शैली का उसने
पालन किया और उस से टस से मस न
हुआ। 3 अपने शासनकाल के अट्ठारहवें साल
में योशिय्याह ने असल्याह के बेटे शापान
मन्त्री को जो मशुल्लाम का पोता था, प्रभु के
भवन में यह कह कर भेजा कि हिलकिय्याह
महापुरोहित के पास जाकर कहे, 4 कि जो
चाँदी प्रभु के भवन में लायी गयी है और
चौकीदारों ने लोगों से इकट्ठी की है, 5 उसे
जोड़ लो और प्रभु के भवन में काम करने
वाले मुखिया को दें, कि वे कारीगरों को दें,
ताकि जिस मरम्मत की ज़रूरत है, वह की
जा सके। 6 अर्थात् बढ़ई लोगों, राजों और
संगतराशों को दें, ताकि यदि कुछ टूटा-फूटा
हो तो उसकी मरम्मत की जा सके। 7 लेकिन
चाँदी जिन के सुपुर्द की गयी, उन से कोई
हिसाब नहीं लिया गया, क्योंकि वे लोग
ईमानदार थे। 8 हिलकिय्याह महापुरोहित ने
शापान मंत्री से कहा, “प्रभु के भवन में मुझे
नियमशास्त्र मिला है। हिलकिय्याह ने वह
किताब शापान को दे दी और उसने उसे
पढ़ना शुरू किया। 9 शापान राजा के पास
लौटा और समाचार दिया कि जो चान्दी प्रभु
के भवन में मिली है उसे राजा के कर्मचारियों
ने थैलियों में डाल कर उनके सुपुर्द कर दिया
है, जो वहाँ काम करवाने वाले हैं। 10 फिर
शापान मंत्री राजा से बोला, “हिलकिय्याह

[a] **21.22** पूर्वजों

पुरोहित ने उसे एक किताब दी है। शापान
उसे पढ़ कर सुनाने भी लगा। 11 प्रभु के
वचन की उन बातों को सुन कर राजा
शोकित हो गया। 12 फिर उसने हिलकिय्याह
पुरोहित, शापान के बेटे अहीकाम, मीकायाह
के बेटे अकबोर, शापान मंत्री और असाया
नाम अपने एक कर्मचारी को आदेश दिया।
13 "मेरी, मेरी प्रजा और सभी यहूदियों की
ओर से प्रभु से पूछो, क्योंकि प्रभु का बड़ा
गुस्सा हम पर इसलिए भड़क गया है क्योंकि
हमारे बापदादों ने इस किताब में लिखी बातों
को तुच्छ जाना। 14 हिलकिय्याह पुरोहित,
अहीकाम, अकबोर शापान और असाया ने
हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से बातचीत
की। 15 वह बोल उठी, "इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर का कहना यह है कि जिस इन्सान
ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, उस से कहो, 16 प्रभु
का कहना यह है, कि जिस किताब को यहूदा
के राजा ने पढ़ा है, उसकी सभी बातों के
अनुसार मैं इस जगह और यहाँ के रहने वालों
पर मुसीबतें लाना चाहता हूँ। 17 उन लोगों
ने मुझे छोड़ दिया और दूसरे देवी-देवताओं
की इबादत की। इसलिए मेरा गुस्सा भड़क
गया है और रूकेगा नहीं। 18 यहूदा का राजा
जिस ने तुम्हें प्रभु से पूछने के लिए भेजा है,
उस से तुम यह कहो कि इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर कहते हैं। 19 इसलिए कि वह सुन
कर नम्र हो गया है मैंने उसकी सुनी है। 20 जो
मुसीबतें आने वाली हैं, वे उसके देहान्त के
बाद आएँगी। यह सब कुछ उन लोगों ने
लौटकर बता दिया।

23 एक दिन राजा ने यहूदा और
यरूशलेम के सभी बुज़ुर्गों को एक
ही समय में अपने पास बुलाया। 2 और
यहूदा के सभी लोगों और नबियों को लेकर
राजा प्रभु के भवन में दाखिल हुआ। वहीं
उसने उस खोजी गयी किताब में से पढ़ा।
3 तब वही खम्भे के पास खड़े-खड़े राजा ने
वायदा किया, "मैं अपने सारे मन, प्राण से
आपकी आज्ञाओं, चितौनियों और विधियों
को मानता रहूँगा। इस किताब में लिखी
बातों का पालन करूँगा।" पूरी प्रजा ने वहाँ
अपनी सहमति भी जतायी। 4 तब राजा ने
हिलकिय्याह महापुरोहित और उसके नीचे
के पुरोहितों और चौकीदारों को आदेश दिया,
"जितने बर्तन बाआल, अशेरा और आकाश
के तारों के लिए बने हैं, उन सभी को प्रभु के
मन्दिर में से निकलवाया जाए और यरूशलेम
के बाहर किद्रोन के खेतों में जला डाला
जाए। ऐसा करने के बाद उसकी राख उसने
बेतेल पहुँचा दी। 5 यहूदा के राजाओं ने जिन
पुजारियों को पूजा-पाट के लिए ठहराया था,
उन्हें हटा दिया। जो राशियों और तारों के
लिए धूप जलाते थे, उन्हें भी राजा ने दूर
किया। 6 प्रभु के भवन में से अशेरा की मूरत
को निकाल कर किद्रोन नाले में ले जाकर
जला डाला। उसकी राख को कबरों के ऊपर
डाल दी। 7 प्रभु के भवन में जो पुरुषगामियों
के घर थे, जहाँ अशेरा के लिए महिलाएँ पर्दे
बुना करती थीं, उन्हें भी गिरा दिया गया।
8 उसने यहूदा के सभी नगरों से पुरोहितों को
बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा तक की ऊँची-ऊँची
जगहों को, जहाँ उन पुरोहितों ने धूप जलाया
था, अशुद्ध कर दिया। जो-जो जगह नगर के
ऊँचे स्थान यहोशू नामक गवर्नर के फ़ाटक
के अन्दर जाने वाले की बाईं ओर थे, उनको
भी उसने नाश किया। 9 फिर भी ऊँचे स्थानों
के पुरोहित यरूशलेम में प्रभु की वेदी के
पास नहीं आए। अपने भाईयों के साथ ही वे
लोग अखमीरी रोटी खाया करते थे। 10 तोपेत
हिन्नोम वंशियों की घाटी में था। उसने उसे

भी अशुद्ध कर दिया, ताकि कोई भी अपने
बेटे या बेटी को मोलेक देवता के लिए आग
में होम न कर पाए। 11 जो घोड़े यहूदा के
राजाओं ने सूरज को अर्पण करके प्रभु के
भवन के दरवाज़े पर नतन्मेंलेक नामक खोज
की बाहरी कोठरी में रखे थे, उन्हें और
सूरज के रथों को आज से भस्म कर डाला।
12 आहाज़ की अटारी की छत पर वेदियाँ
यहूदा के राजाओं ने बनायी थीं। मनश्शे ने
भी प्रभु के दोनों आंगनों में वेदियाँ बनायी
थीं। उन सभी को राजा ने बर्बाद कर डाला।
13 राजा ने उन ऊँचे स्थानों को भी अशुद्ध
कर दिया, जो इस्राएल के राजा सुलैमान
यरूशलेम के पूरब की ओर विकारी नामक
पहाड़ी की दक्षिणी अलंग, अश्तोरेत नाम
सिदोनियों को घिनौनी देवी और कामोश
नामक मोआबियों के घिनौने देवता और
मिल्कोम नाम अम्मोनियों के घिनौने देवता
के लिए बनवाए थे। 14 उसने लाटों को तोड़
डाला। उनकी जगह पर इन्सानों की हड्डियाँ
डाल दीं। 15 उसने उस वेदी और ऊँचे स्थान
को भी बर्बाद किया, जिसे नाबात के बेटे
यारोबाम ने बनवाया था। 16 योशिय्याह ने
पहाड़ की कब्रों से हड्डियों को मँगवा कर
वेदी को अशुद्ध करवाया। यह सभी प्रभु के
कहने के मुताबिक हुआ। 17 तब उसने खम्भे
के बारे में जानकारी पानी चाही। लोगों ने
बताया कि वह प्रभु के उस भक्त की कब्र
है जिस ने यहूदा से आकर उन सब बातों की
भविष्यवाणी की थी, जो राजा कर रहा है।
18 तब वह बोला कि भविष्यद्वक्ता की कब्र
से हड्डियाँ न निकाली जाएँ। 19 इसके बाद
योशिय्याह ने उन ऊँची जगहों और वहाँ की
इमारतों को ढा दिया, जिसे बना कर इस्राएल
के राजाओं ने प्रभु को गुस्सा दिलाया था।
बेतेल की तरह ही उसने वहाँ भी किया।
20 मूर्तिपूजक पुरोहितों का उसने वहीं की
वेदियों पर चढ़ा दिया और वापस लौट गया।
21 अपने लोगों को राजा ने हिदायत कि प्रभु
के आदेश के अनुसार फ़सह का त्यौहार
मनाएँ। 22 ऐसा त्यौहार जो न ही न्यायियों के
समय में मनाया गया और न ही यहूदा के
राजाओं के समय में। 23 इस फ़सह के त्यौहार
को राजा योशिय्याह के अट्ठारहवें साल में
मनाया गया। 24 फिर टोना-टुटका, भूतसिद्धी,
गृहदेवता और दूसरी घिनौनी चीजों को जो
यहूदा और यरूशलेम में थी, योशिय्याह ने
बर्बाद किया और व्यवस्था में लिखी बातों
को किया। 25 योशिय्याह के पहले और बाद
में ऐसा कोई राजा न हुआ, जिस ने प्रभु की
आज्ञाओं का पालन पूरी तरह से किया हो।
26 इसके बावजूद भी प्रभु का गुस्सा कम नहीं
हुआ। इसका कारण था मनश्शे के गलत
काम। 27 प्रभु ने पहले ही से कह दिया था
कि उन्होंने जैसे इस्राएल को तुच्छ जाना है,
वैसे ही यहूदा के साथ करूँगा। मैं अपने
चुने हुए शहर यरूशलेम के खिलाफ़ हाथ
उठाऊँगा। 28 यहूदा के राजाओं के इतिहास
की पुस्तक में योशिय्याह के कामों का ब्यौरा
है। 29 उसी के शासनकाल में मिस्र का राजा
फ़िरौन को, असीरिया के राजा के खिलाफ़
फ़रात नदी तक पहुँचा और वहीं उसकी जान
ले ली। 30 उसके शव को उसके कर्मचारियों
ने रथ पर रख कर मगिद्दो से यरूशलेम को
पहुँचा दिया। वहीं उसे दफ़ना दिया गया।
इसके बाद यहोआहाज जो कि उस का
बेटा था, राजा बना। 31 उस समय वह तेईस
साल का था। उसने तीन महीने राज-पाट
सम्भाला। उसकी माँ का नाम हमूतल था।
32 प्रभु की निगाह में जो ठीक नहीं था, वह
करता रहा। 33 फ़िरौन नको ने उसे रिबला में
बान्ध लिया, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न

कर सके। उसने देश पर सौ किक्कार चान्दी
और किक्कार भर सोना ज़ुर्माना कर दिया।
34 फ़िरौन नको ने उसकी जगह योशिय्याह के
पुत्र एल्याकीम को राजा बनाया। उसने उस
का नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया।
उसे वह मिस्र ले गया जहाँ उसकी मौत हो
गयी। 35 यहोयाकीम ने फ़िरौन को वह चाँदी
और सोना तो ज़रूर दिया, लेकिन लोगों पर
टॅक्स लगा दिया। 36 उसकी उम्र उस समय
पच्चीस थी, जब उसके हाथ में राजकाज दिया
गया। ग्यारह साल तक उसने राज्य किया।
उसकी माँ का नाम जबीदा था। 37 वह भी
वही करता रहा जो सही नहीं था।

24 उसके शासनकाल में बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर ने हमला कर
दिया था। तीन साल तक यहोयाकीम उसके
वश में ही था। इसके बाद उसने विद्रोह
कर डाला। 2 तब प्रभु ने उसके खिलाफ़
और यहूदा को बर्बाद कर डालने के
लिए कसदियों, अरामियों , मोआबियों और
अम्मोनियों को उकसाया। इस बात को
नबियों के द्वारा प्रभु पहले ही कह चुके थे।
3 यह प्रभु ने इसलिए होने दिया ताकि अपने
पास से यहूदा को हटा दें। इसका कारण
मनश्शे के गुनाह थे। 4 उसने बेगुनाहों का
खून बहाया था और प्रभु उसे माफ़ नहीं
करना चाहते थे। 5 उसके किए हुए कामों
का वर्णन यहूदा के राजाओं की पुस्तक में
है। 6 यहोयाकीम के देहान्त के बाद उस
का बेटा यहोयाकीन राजा के पद पर बैठा।
7 उसके बाद मिस्र का राजा कभी भी अपने
देश से बाहर नहीं आया, क्योंकि बाबेल के
राजा ने मिस्र के नाले से लेकर फ़रात नदी
तक जितना देश मिस्र के राजा का था, सभी
अपने कब्ज़े में कर लिया। 8 अट्ठारह वर्ष
का वह था, जब उसने शासन शुरू किया।
उसकी माँ का नाम था नहुश्ता। 9 प्रभु के तौर
तरीकों के वह भी खिलाफ़ रहा। 10 उन दिनों
नबूकदनेस्सर के कर्मचारियों ने यरूशलेम
पर हमला करके उसे घेर लिया। 11 तभी वह
खुद वहाँ पर आ पहुँचा। 12 और यहूदा का
राजा यहोयाकीन, अपनी माता, कर्मचारियों,
गवर्नरों और खोजों को साथ लेकर बाबेल
के राजा के पास गया। बाबेल के राजा ने
अपने शासन के आठवें साल में उसे पकड़
लिया। 13 तब उसने प्रभु के भवन में और
राजभवन में रखी हुयी पूरी दौलत को वहाँ
से निकाला। सोने के जो बर्तन इस्राएल के
राजा सुलैमान ने बना कर प्रभु के मन्दिर
में रखे थे, उन सभी के टुकड़े कर डाले।
14 फिर सभी गर्वनरों और रईसों को मिला
कर जो दस हज़ार थे और सभी कारीगरों
और लोहारों को गुलाम बना कर ले गया।
केवल गरीब लोगों को उसने रहने दिया।
15 वह यहोयाकीन, उसकी माँ, महिलाओं
और खोजों को गुलाम करके बाबेल ले
आया। 16 रईस सात हज़ार, कारीगर और
लोहार मिला कर एक हज़ार थे। ये सभी फ़ौज
में लड़ने के लायक थे। 17 बाबेल के राजा
ने उसकी जगह उसके चाचा मत्तन्याह को
राजगद्दी दे दी और उस का नाम सिदकिय्याह
रख दिया। 18 उस समय सिदकिय्याह इक्कीस
वर्ष का था। उसने यरूशलेम पर ग्यारह
वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम
हमूतल था। 19 यहोयाकीम की तरह वह भी
सही राह पर नहीं चला। 20 प्रभु के क्रोध के
कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी हालत
हो गयी, कि प्रभु ने उन्हें छोड़ दिया।

25 सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा के
विरोध में गद्दारी की। उसके राज्य

के नौवें साल के दसवें महिने के दसवें दिन
को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी
पूरी फ़ौज लेकर यरूशलेम पर हमला बोल
दिया। 2 सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें साल
तक नगर घिरा रहा। 3 चौथे महीने के नौवें
दिन से नगर में इतनी महँगाई हो गयी कि
लोगों के लिए खाने के लिए कुछ न था।
4 फिर नगर की शहरपनाह में दरार बनायी
गयी। दोनों दीवारों के बीच जो फ़ाटक
राजा के बगीचे के पास था उस रास्ते
से सभी फ़ौजी रात-ही-रात भाग खड़े हुए।
बाबेलवासी नगर को घेरे हुए थे, लेकिन राजा
अराबा के रास्ते से निकल गया। 5 तब बाबेल
की फ़ौज ने राजा का पीछा किया। यरीहो
के पास अराबा में उसे धर दबोचा। उसकी
पूरी फ़ौज भी वहाँ तित्तर-बितर हो गयी। 6 वे
लोग राजा को पकड़ कर रिबला में बाबेल के
राजा के पास ले गए। उसे सज़ा भी सुना दी
गयी। 7 सिदकिय्याह के बेटों को उन लोगों
ने मार डाला। सिदकिय्याह की आँखें फोड़
दीं और पीतल की जंजीर से बाँधकर बाबेल
ले गए। 8 बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के
उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के सातवें
दिन को जल्लादों को मुखिया नबूजरदान जा,
जो बाबेल के राजा का एक कर्मचारी था,
यरूशलेम आया। 9 उसने प्रभु के भवन और
राजमहल और यरूशलेम के सभी घरों को
अर्थात् हर एक बड़े घर को आग लगा कर
भस्म कर डाला। 10 यरूशलेम के चारों ओर
की चाहरदीवारी को बाबेलवासियों की पूरी
फ़ौज ने जो जल्लादों के मुखिया के संग थी,
ढा दिया। 11 जो लोग नगर में बाकी बच
गए थे और जो बाबेल के राजा के पास
भाग गए थे और आम इन्सान, इन सभी
को जल्लादों का मुखिया नबूजरदान गुलाम
करके ले गया। 12 लेकिन जल्लादों के मुखिया
ने देश के गरीबों में से तमाम को अंगूर
के बगीचों की देख-रेख और खेती-किसानी
करने के लिए छोड़ दिया। 13 प्रभु के भवन
में जो पीतल के खम्भे थे और कुर्सियाँ और
पीतल का हौद जो प्रभु के भवन में था, इन
को बाबेलवासी तोड़ कर, पीतल अपने देश
ले गए। 14 और हण्डियों, फावड़ों, चिमटों,
धूपदानों और पीतल के सभी बर्तनों को जिन
से सेवा होती थी, वे ले गए। 15 सोने के
करछे और कटोरियाँ और चाँदी की चीजें,
जल्लादों का प्रधान ले गया। 16 सुलैमान ने
मन्दिर के लिए जो कुर्सियाँ बनायीं थी और दो
खम्भे, एक हौद इन सब का वज़न बहुत था।
17 एक खम्भे की ऊँचाई अट्ठारह हाथ की थी
और खम्भे के ऊपर तीन हाथ ऊँची पीतल
की कंगनी थीं। इन कंगनियों पर जाली और
अनार पीतल के थे। 18 जल्लादों के मुखिया
ने सरायाह महापुरोहित और दूसरे पुरोहित
सपन्याह और तीनों चौकीदारों को पकड़
लिया। 19 नगर में से उसने एक गवर्नर को
हिरासत में लिया, जो फ़ौजियों के ऊपर था।
जो आदमी राजा के सामने रहा करते थे, इन
में से पाँच जन जो वहाँ दिखे थे और सेना
अध्यक्ष का मुन्शी जो लोगों को फ़ौज में
भरती करता था और लोगों में से साठ आदमी
जो नगर में मिले। 20 इन सभी को नबूजरदान
पकड़ कर रिबला के राजा के पास ले गया।
21 बाबेल के राजा ने उन्हें हमात देश के
रिबला में इस तरह मारा कि वे मर गए।
इस तरह यहूदी गुलाम की तरह अपने मुल्क
से निकाल दिए गए। 22 जो लोग यहूदा में
बच गए थे और जिन्हें नबूकदनेस्सर ले नहीं
गया था, उन पर गदल्याह को अधिकारी
रखा गया। 23 जब सेना और उनके लोगों
ने अर्थात् नतन्याह के बेटे इश्माएल, कारेह
के बेटे योहानान, नतोपाई तन्हूमेंत के बेटे

सरायाह और माकाई का बेटा याजन्याह
ने सुना कि बाबेल के राजा ने गदल्याह
को राजा बनाया है, तो वे दलों के साथ
मिस्पा में गदल्याह के पास आए। 24 शपथ
खाते हुए गदल्याह उन से बोला, “बाबेल
के सिपाहियों से मत डरना। बाबेल के राजा
की अधीनता में रहने में तुम्हारा फ़ायदा है।
25 सातवें महीने में नतन्याह के बेटे इश्माएल
ने दस लोगों को के साथ जाकर गदल्याह
पर ऐसा वार किया, कि उसने प्राण छोड़
दिए। उसके साथ मिस्पा में जो यहूदी और
बाबेल वासी थे, उन्हें अपनी जान खोनी
पड़ी। 26 तब छोटे-बड़े सभी प्रजा के लोग
भाग खड़े हुए और मिस्र में जाकर रहने लगे।
27 यहूदा के राजा यहोयाकीन की गुलामी
के तैंतीसवे वर्ष में अर्थात् जिस साल में
बाबेल का राजा एबील्मरोदक राजगद्दी पर
बैठा। उसी के बारहवें महीने के सत्ताइसवें
दिन को उसने यहूदा के राजा यहोयाकीम
को जेल से निकाला और ऊँचा औहदा
दिया। 28 मीठी-मीठी बातें करके उसने उस
का राजासन न राजाओं के राजासन से
ऊँचा किया, जो उसके संग बाबेल में थे।
29 उसके जेल के कपड़े बदले गए और अपने
जीवन भर राजा के साथ खाना खाता रहा।
30 उसके जीवन भर के लिए राजा की ओर
से खर्चा-पानी ठहरा दिया गया।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com